दैनिक
करंट क्राइम
www.currentcrime.com
सिर्फ सच...
दिल्ली व गाजियाबाद से एक साथ प्रकाशित

● नई दिल्ली। सोमवार 16 दिसंबर-2024 | ● वर्ष : 9 अंक : 357 पेज-08 | ● RNI NO. DELHIN/2015/65364 | ● मूल्य : ₹3

नहीं रहे तबला वादक उस्ताद जाकिर हुसैन

नई दिल्ली। विश्व विख्यात तबला वादक और पद्म विभूषण उस्ताद जाकिर हुसैन का निधन हो गया है। सैन फ्रांसिस्को में उनका इलाज चल रहा था। वहीं उन्होंने आखिरी सांस ली। उनका जन्म 9 मार्च 1951 को मुंबई में हुआ था। उस्ताद जाकिर हुसैन को 1988 में पद्म श्री, 2002 में पद्म भूषण और 2023 में पद्म विभूषण से नवाजा गया था।

जाकिर हुसैन को तीन ग्रैमी अवॉर्ड भी मिल चुके थे। उनके पिता का नाम उस्ताद अल्लाह रक्खा कुरैशी और मां का नाम बीवी बेगम था।

जाकिर के पिता अल्लाह रक्खा भी तबला वादक थे। जाकिर हुसैन की प्रारंभिक शिक्षा मुंबई के माहिम स्थित सेंट माइकल स्कूल से हुई थी। इसके अलावा उन्होंने ग्रेजुएशन मुंबई के ही सेंट जेवियर्स कॉलेज से किया था। जाकिर हुसैन ने सिर्फ 11 साल की उम्र में अमेरिका में पहला कॉन्सर्ट किया था। 1973 में उन्होंने अपना पहला एल्बम 'लिविंग इन द मैटेरियल वर्ल्ड' लॉन्च किया था।

सपाट जगह देखकर उंगलियों से धुन बजाने लगते थे उस्ताद जाकिर हुसैन जाकिर हुसैन के अंदर बचपन से ही धुन बजाने का हुनर था।

वे कोई भी सपाट जगह देखकर उंगलियों से धुन बजाने लगते थे। यहां तक कि किचन में बर्तनों को भी नहीं छोड़ते थे। तवा, हांडी और थाली, जो भी मिलता उस पर हाथ फेरने लगते थे।

संभल में 46 साल बाद खुला शिव मंदिर

जिलाधिकारी और एसपी की निगरानी में मंदिर की सफाई कराई गई

संभल। संभल के शाही जामा मस्जिद क्षेत्र में शनिवार सुबह जिला प्रशासन ने अतिक्रमण और बिजली चोरी के खिलाफ बड़े पैमाने पर अभियान चलाया। इस दौरान 46 साल से बंद भगवान शिव का मंदिर खुलवाया गया। यह मंदिर महमूद खा सराय इलाके में एक बंद मकान में पाया गया, जो 1978 के दंगे के दौरान हिंदू परिवार का था।

बाद में मकान बेच दिया गया और तब से यह बंद पड़ा था। जिला अधिकारी (डीएम) राजेंद्र पेंसिया और पुलिस अधीक्षक (एसपी) कृष्ण कुमार बिश्नोई की निगरानी में मंदिर की सफाई कराई गई और कुएं की खुदाई शुरू कराई गई है। डीएम पेंसिया ने बताया कि मकान के मालिकाना हक को लेकर जांच की जा रही है। साथ ही, शाही जामा मस्जिद क्षेत्र में अतिक्रमण हटाने और बिजली चोरी रोकने के लिए सख्त कार्रवाई जारी है। प्रशासन की टीम ने इलाके में सड़कों,

नालों से अतिक्रमण हटाने के आदेश दिए हैं। बिजली चोरी के खिलाफ चलाए गए इस अभियान में 300 से अधिक मकानों में बिजली चोरी पकड़ी गई। इनमें कई मस्जिदें भी शामिल हैं।

टीम ने पाया कि एक मस्जिद में 59 पंखे, एक फ्रिज, वॉशिंग मशीन और 25-30 लाइट प्वाइंट बिजली चोरी से चलाए जा रहे थे। विद्युत विभाग के अधिशासी अभियंता नवीन गौतम ने बताया कि दोषियों पर कार्रवाई हो रही है। पुलिस ने बिजली विभाग की टीमों की सुरक्षा के लिए क्षेत्र में दो प्लाटून पुलिस बल तैनात किया है। प्रशासन की इस सख्त कार्रवाई से इलाके में हड़कंप मचा हुआ है।

मस्जिदों में भी बिना कनेक्शन चलती मिली बिजली : नखासा थाना क्षेत्र में डीएम डॉ राजेंद्र पैंसिया और एसपी कृष्ण कुमार विश्नोई के नेतृत्व में बिजली विभाग की टीम ने रायसत्ती, नखासा, हिन्दूपुरा खेड़ा और दीपा सराय में चेकिंग अभियान चलाया। कई मकानों में बिजली चोरी पकड़ी है। इसमें कई मस्जिदें भी शामिल हैं। सभी के खिलाफ बिजली चोरी की रिपोर्ट दर्ज की जानी है। लाखों रुपये का जुमार्ना भी लगाया जाएगा।

डीएम ने बताया कि संभल शहर में सबसे ज्यादा लाइनलॉस इन्हीं इलाके में होता है। हर महीने करोड़ों रुपये की बिजली चोरी की जाती है। बिजली विभाग की टीम प्रभावी तरीके से कार्रवाई नहीं कर पाती है। इसलिए यह कार्रवाई शनिवार की सुबह से शुरू कराई गई है। बताया कि अतिक्रमण भी हटवाया जा रहा है।

अतिक्रमण करने वालों पर होगी कार्रवाई : जामा मस्जिद क्षेत्र में शनिवार को बिजली चोरी के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के दौरान 46 साल से बंद भगवान शिव और हनुमान के मंदिर का पता चला। मंदिर को अतिक्रमण कर घरों में तब्दील कर दिया गया था। प्रशासन ने मंदिर को साफ कराया और अतिक्रमण करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की बात कही है।

जिला अधिकारी (डीएम) डॉ. राजेंद्र पेंसिया ने बताया कि बिजली चोरी के खिलाफ अभियान के दौरान एक मंदिर मिला, जिसे अतिक्रमण कर बंद कर दिया गया था।

मंदिर की सफाई कराई जा रही है और इसके पास स्थित एक प्राचीन कुएं के ऊपर रैंप बनाया गया था। रैंप हटाने पर कुआं मिला।

दो वार्डों के उपचुनाव का प्रचार हुआ समाप्त

पोलिंग से पहले पुलिस ने बनाया सुरक्षा वाला प्लान

- पुलिस लाइन में हुई दो सर्किल के अधिकारियों की मीटिंग

गाजियाबाद, करंट क्राइम : 17 दिसंबर को गाजियाबाद नगर निगम के दो वार्डों में उपचुनाव है। जिसमें वार्ड 19 और 21 शामिल हैं।

रविवार को दोनों ही वार्डों में होने वाले उपचुनाव को लेकर चुनाव प्रचार का अंतिम दिन था। शाम 5 बजे ही प्रचार बंद हो गया है। यहां 17 दिसंबर को मतदान होगा और 19 दिसंबर काउंटिंग की प्रक्रिया पूरी होने के बाद विजय प्रत्याशियों की घोषणा की जाएगी। नगर निगम उपचुनाव दो वार्डों में है, इसको लेकर पुलिस-प्रशासन अपनी तैयारी पूरी कर चुका है।

तो वहीं रविवार को डीसीपी सिटी जोन राजेश कुमार के नेतृत्व में एडीसीपी ट्रैफिक व चुनाव के नोडल प्रभारी पीयूष सिंह, एसीपी कवि नगर अभिषेक श्रीवास्तव, एसीपी इंदिरापुरम स्वतंत्र सिंह, एसीपी अजय कुमार सिंह, सिहानी गेट थाना प्रभारी, कवि नगर थाना प्रभारी, कौशांबी थानाध्यक्ष व अन्य पुलिसकर्मियों की पुलिस लाइन में चुनावी प्लानिंग को लेकर बैठक हुई।

दो वार्डों में 26 हजार मतदाता चुनेगें नया पार्षद

करंट क्राइम : नगर निगम के दो वार्डों में उप चुनाव होना है। उपचुनाव जहां वार्ड संख्या-19 में कुल मतदाताओं की संख्या 13,234 और वार्ड संख्या -21 में कुल मतदाताओं की संख्या 13,083 है। वार्ड संख्या 19 में 12 और वार्ड संख्या 21 में 11 पोलिंग बूथ बनाए गए हैं। 17 दिसंबर को सुबह आठ से पांच बजे के बीच मतदाता दोनों सीटों प्रत्याशियों के चुनाव के लिए ईवीएम के माध्यम से मतदान करेंगे। 19 दिसंबर को मतगणना के बाद चुनाव परिणाम जारी किए जाएंगे।

पुलिसकर्मियों को दिए गए चुनावी ड्यूटी के निर्देश

करंट क्राइम : 17 दिसंबर को नगर निगम के दो वार्ड 19 और वार्ड 21 में उपचुनाव होना है। उपचुनाव से पहले रविवार को पुलिस कमिश्नरेट गाजियाबाद में पुलिस अधिकारियों ने संबंधित पुलिस टीमों को चुनाव संबंधी दिशा निर्देश दिए हैं। इस दौरान चुनाव आयोग की गाइडलाइंस का पालन करने से लेकर पोलिंग बूथ पर सुरक्षा व्यवस्था में अन्य इंतजाम देखने का निर्देश दिया गया है। तो वहीं चुनाव को कोई किसी प्रकार से प्रभावित न करने पाए, इसको लेकर भी पुलिस के अधिकारियों ने पुलिस टीमों को ब्रीफ किया है।

पोलिंग बूथ के आसपास नहीं जुटेगी भीड़

करंट क्राइम : पुलिस के अधिकारियों ने निर्देश दिया है कि दोनों ही वार्डों में जहां पर गाजियाबाद नगर निगम के उपचुनाव होने हैं। वहां पर पोलिंग बूथ के आसपास भीड़ नहीं जुटनी चाहिए। साथ ही जहां पर पोलिंग पार्टी अपने बस्ते लगाएंगे, वहां पर भी पुलिस को निगरानी रखने का निर्देश दिया गया है। साथ ही मोबाइल फोन लेकर जाने वालों को रोकने और पार्टियों को एजेंट्स पर भी नजरें रखने का आदेश दिया गया है।

बैठक

गाजियाबाद (करंट क्राइम)। आज शहर विधायक संजीव शर्मा विधान सभा में शीत कालीन सत्र में शामिल होंगे। उससे पहले रविवार को लखनऊ में लोकभवन में विधान मंडल दल की बैठक हुई। इस बैठक में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ,डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य, डिप्टी सीएम बृजेश पाठक,प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी,प्रदेश संगठन महामंत्री धर्मपाल सिंह, ने सभी विधायकों के साथ शीत कालीन सत्र की सदन रणनीति पर चर्चा की। इस बैठक में गाजियाबाद के नव निर्वाचित शहर विधायक संजीव शर्मा की सहभागिता रही। एक विधायक के रूप में संजीव शर्मा की यह पहली विधान मंडल दल की बैठक है और आज वो शीत कालीन सत्र के साथ अपने विधानसभा सत्र वाले सफर की शुरूआत करेंगे।

नए साल पर निगम देगा 20 इलेक्ट्रिक व्हीकल चार्जिंग स्टेशनों का तोहफा

हजारों इलेक्ट्रिक वाहन स्वामियों को मिलेगी चार्जिंग वाली राहत

शहर से लेकर नदिया पार तक बनेंगे इलेक्ट्रिक चार्जिंग स्टेशन

गाजियाबाद, करंट क्राइम : गाजियाबाद नगर निगम नए साल पर इलेक्ट्रिक व्हीकल चार्जिंग की शुरूआत करने जा रहा है। इसके लिए 20 स्थानों पर चार्जिंग स्टेशन के कामकाज को पूरा करने के निर्देश दिए गए हैं। इसके साथ ही दावा किया जा रहा है कि 20 स्थानों पर चार्जिंग स्टेशन चालू होने का फायदा लगभग 40 हजार इलेक्ट्रिक व्हीकल वाहनों के स्वामियों को होगा। तो वहीं नगर निगम गाजियाबाद के अधिकारियों का यह भी मत है कि इलेक्ट्रिक व्हीकल योजना से जहां वायु प्रदूषण की स्थिति में सुधार होगा। तो वही अमूल्य ईंधन की भी बचत होगी। इसके साथ ही गाजियाबाद उत्तर प्रदेश में इस तरीके की योजना को बड़े स्तर पर शुरू करने वाला पहला शहर बनेगा।

नगर निगम गाजियाबाद के अधिकारियों का कहना है कि एक माह के भीतर 20 इलेक्ट्रिक व्हीकल स्टेशन स्थापित करने का कार्य ट्रिपल पी मॉडल पर प्रारंभ किया गया है। ट्रिपल पी मॉडल यानी प्राइवेट पब्लिक पार्टनरशिप के तहत इसे अमली जामा पहनाया जाएगा ताकि बड़ी आबादी को इसका लाभ मिल सके।

गोविंदपुरम से लेकर हिंडन एयर फोर्स तक बनाए जाएंगे चार्जिंग स्टेशन

करंट क्राइम : शहरभर में 20 स्थानों पर इलेक्ट्रिक व्हीकल चार्जिंग स्टेशन बनाने की प्रक्रिया को अंतिम रूप देने का काम शुरू कर दिया गया है। इसे लगभग एक महीने के भीतर शुरू करने का अधिकारी दावा कर रहे हैं। इसके तहत कवि नगर जोन के अंतर्गत गोविंदपुरम, मेरठ रोड दुहाई, डायमंड फ्लाईओवर विवेकानंद नगर रेलवे ब्रिज पर चार इलेक्ट्रिक व्हीकल चार्जिंग स्टेशन लगेंगे। तो सिटी जोन के अंतर्गत रेत मंडी नंदग्राम, राज नगर एक्सटेंशन में हिंडन पेट्रोल पंप, हिंडन शमशान घाट, सांई उपवन पटेल मार्ग जीटी रोड नया बस अड्डे को मिलाकर कुल 6 चार्जिंग स्टेशन स्थापित किए जाएंगे। विजयनगर अंतर्गत ताज हाईवे क्रॉसिंग रिपब्लिक ,अकबरपुर-बहरामपुर पर चार्जिंग स्टेशन लगाए जाएंगे। तो मोहन नगर जोन के अंतर्गत हिंडन एयरफोर्स स्टेशन मोहन नगर, टी पॉइंट अर्थला मेट्रो स्टेशन, राजेंद्र नगर पर चार इलेक्ट्रिक व्हीकल चार्जिंग स्टेशन लगेंगे। इसके साथ ही वसुंधरा जोन अंतर्गत कनावनी पुलिया और सौर ऊर्जा मार्ग पर भी दो चार्जिंग स्टेशन शुरू करने का काम लगभग अंतिम चरण पर पहुंचने वाला है।

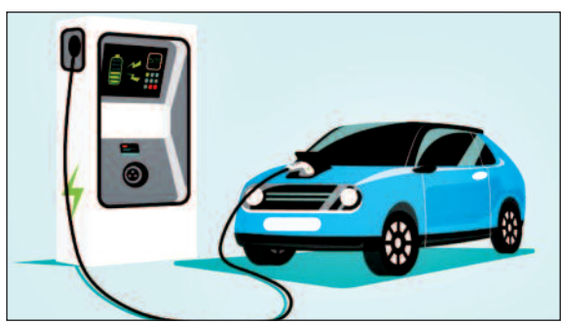

जनवरी में शुरू हो जाएंगे चार्जिंग स्टेशन

करंट क्राइम : गाजियाबाद नगर निगम शहर को स्वच्छ एवं क्लीन और ग्रीन बनाना चाहता है। इसी के तहत नगर आयुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक द्वारा इलेक्ट्रिक व्हीकल चार्जिंग स्टेशन की टेंडर प्रक्रिया को पूर्ण करने की जानकारी दी गई है। उनका कहना है कि जनवरी 2025 नए साल में गाजियाबाद नगर निगम सीमा अंतर्गत 20 स्थानों पर इलेक्ट्रिक व्हीकल चार्जिंग स्टेशन स्थापित किए जाएंगे। जिससे करीब 35 से 40 हजार इलेक्ट्रिक व्हीकल यूजर्स को लाभ मिलेगा। यहां कम समय में अपने वाहनों को कम दूरी पर चार्ज कर पाएंगे और यह प्रक्रिया बेहद जल्द लगभग पूरी कर दी जाएगी।

वायु प्रदूषण की स्थिति में भी आएगा सुधार

करंट क्राइम : नगर आयुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक का कहना है कि गाजियाबाद में वाहनों का दबाव अधिक है। यहां पेट्रोल-डीजल और सीएनजी के वाहनों की संख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है। तो इसके साथ-साथ जिला प्रशासन द्वारा इलेक्ट्रिक व्हीकल सेल के अधिकारियों के साथ जिलाधिकारी के साथ कार्यक्रम रखा गया था। जिसमें नगर निगम क्षेत्र में इलेक्ट्रिक वाहन बेचने वाली कंपनियों और उनके प्रबंधकों से कहा गया था कि वह जन-जन तक इसे पहुंचाने और इसकी नई स्कीम भी मुहैया कराएं ताकि इस ओर लोगों का रुझान जाए। वहीं नगर निगम के नगर आयुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक का कहना है कि शहर में 20 नई इलेक्ट्रिक व्हीकल चार्जिंग पॉइंट की शुरूआत होगी, तो लोग इलेक्ट्रिक व्हीकल के प्रति रुझान बढ़ाएंगे। वाहनों की संख्या बढ़ेगी, तो इससे वायु प्रदूषण का स्तर भी सुधरेगा।

गाजियाबाद इलेक्ट्रिक व्हीकल चार्जिंग स्टेशन के मामले में आएगा फर्स्ट

करंट क्राइम : नगर आयुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक द्वारा बताया गया है कि इलेक्ट्रिक व्हीकल योजना को गाजियाबाद में रफ्तार दी जा रही है। प्रदेश में पहला गाजियाबाद नगर निगम है, जिसके द्वारा इलेक्ट्रिक व्हीकल चार्जिंग स्टेशन के लिए टेंडर प्रक्रिया को पूर्ण कर दिया गया है। इसी के साथ गाजियाबाद में सबसे पहले जिलाधिकारी इन्द्र विक्रम सिंह की अध्यक्षता में ईवी सेल का गठन किया गया था। तो वहीं गाजियाबाद नगर निगम द्वारा इलेक्ट्रिक व्हीकल को बढ़ावा देने के लिए ईवी प्लान का भी कार्य जोरों पर किया जा रहा है। जिसके अंतर्गत शहर में अधिक से अधिक इलेक्ट्रिक व्हीकल यूजर्स बड़ी योजना बनाई जा रही है और इलेक्ट्रिक व्हीकल योजना को प्रमोट भी किया जा रहा है। सेरीफाई सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड की सबसे कम कास्टिंग प्राप्त हुई है, जो एक महीने में 20 इलेक्ट्रिक व्हीकल स्टेशनों को स्थापित करने का दावा कर रही है।

गाजियाबाद में सबसे पहले जिलाधिकारी इन्द्र विक्रम सिंह की अध्यक्षता में ईवी सेल का गठन किया गया था।

शीतलहर का कहर जारी, मैदानी इलाकों में न्यूनतम तापमान माइनस 10 डिग्री पहुंचा

नई दिल्ली। उत्तर भारत के कई इलाके इन दिनों कड़ाके की सर्दी झेल रहे हैं। कई जगह भयंकर शीत लहर चल रही है। हैरानी की बात ये है कि भारत का उत्तर पूर्वी राज्य ओडिशा, वहां इस बार पारा माइनस 10 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है। रविवार को उत्तरी ओडिशा में भीषण शीतलहर चली, जिससे राज्य के मयूरभंज जिले के रामतीर्थ इलाके में ठंड ने अपना कहर बरपाया और न्यूनतम तापमान माइनस 10 डिग्री सेल्सियस तक गिर गया।

17 दिसंबर तक सताएगी शीतलहर : ओडिशा के वन विभाग के अनुसार, रामतीर्थ के अलावा गुरगुरिया और

बरेहीपानी जैसे अन्य इलाकों में तापमान 6 डिग्री सेल्सियस, चहाला में 4 डिग्री सेल्सियस, नवाना में -5 डिग्री सेल्सियस और ऊपरी बरहा कमुदा (यूबीके) में -3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। शनिवार को मौसम विभाग की वैज्ञानिक डॉ सोमा सेन रॉय ने बताया कि उत्तर और मध्य भारत में एक से दो दिन तक शीतलहर चलेगी और 16-17 दिसंबर तक तापमान में बढ़ोतरी होने की संभावना है। सोमा सेन ने कहा कि 'उत्तर भारत में उत्तर-पश्चिमी हवाएं चल रही हैं और दक्षिण-पूर्वी हवाएं चलेंगी। हवाओं में इस बदलाव के चलते राजधानी दिल्ली में तापमान में 1-2 डिग्री सेल्सियस की गिरावट आ सकती है। पंजाब और मध्य प्रदेश में भी शीतलहर चल रही है। 16-17 दिसंबर तक तापमान में वृद्धि होने की संभावना है।'

मध्य प्रदेश भी शीतलहर की चपेट में : मौसम विभाग का कहना है कि श्रीनगर में अधिकतम तापमान 9 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान माइनस पांच डिग्री सेल्सियस रहा। पहाड़ों पर बर्फबारी के चलते उत्तर भारत के मैदानी इलाके इन दिनों कड़ाके की ठंड का सामना कर रहे हैं। राजधानी दिल्ली में रविवार को न्यूनतम तापमान सात डिग्री सेल्सियस रहा। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में तापमान गिरकर 3.8 डिग्री पहुंच गया है। यह सामान्य से 7 डिग्री सेल्सियस कम है। शनिवार को राजस्थान में भी न्यूनतम तापमान माइनस 1.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

आज लोकसभा में पेश नहीं होगा एक देश - एक चुनाव विधेयक

नई दिल्ली। एक देश एक चुनाव विधेयक के सोमवार को लोकसभा में पेश होने की चर्चा थी, लेकिन अब सरकार ने इसे टाल दिया है। 'एक देश एक चुनाव' विधेयक अब इस सप्ताह के बाद के दिनों में लोकसभा में पेश किया जा सकता है। रिपोर्ट्स के अनुसार, सरकार पहले वित्तीय कार्यों को पूरा करेगी।

पहले संसद में वित्तीय कार्य निपटाएगी सरकार : गौरतलब है कि दो विधेयक - संविधान (129वां संशोधन) विधेयक और संघ राज्य क्षेत्र कानून (संशोधन) विधेयक, सोमवार को लोकसभा में पेश किए जाने के लिए सूचीबद्ध थे। सोमवार को अब पहले अनुदानों की अनुपूरक मांगों को सदन द्वारा पारित किए जाने के बाद इस सप्ताह के अंत में विधेयक पेश किए जा सकते हैं। लोकसभा सचिवालय द्वारा जारी संशोधित कार्य सूची में सोमवार के एजेंडे में ये दोनों विधेयक शामिल नहीं हैं। संसद का शीतकालीन सत्र 20 दिसंबर को समाप्त होने वाला है।

2034 से पहले नहीं होंगे एक साथ चुनाव : गुरुवार को कैबिनेट ने संविधान (129वां संशोधन) विधेयक, 2024 और केंद्र शासित प्रदेश कानून (संशोधन विधेयक), 2024 को मंजूरी दी था, जिसके बाद

शुक्रवार शाम को इसे सांसदों को वितरित किया गया। संविधान संशोधन विधेयक के अनुसार, राष्ट्रपति द्वारा लोकसभा चुनाव के बाद पहली बैठक में एक तारीख तय की जाएगी। इस तय तारीख के बाद सभी निर्वाचित राज्य विधानसभाओं का कार्यकाल लोकसभा के पूर्ण कार्यकाल के साथ समाप्त हो जाएगा, जिससे एक साथ चुनाव कराने का मार्ग साफ हो जाएगा। अब 2024 के चुनाव हो चुके हैं तो संभव है कि 2029 के आम चुनाव के बाद यह तारीख तय की जाएगी। ऐसे में 2034 से पहले एक साथ चुनाव होने की उम्मीद बेहद कम है।

पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता वाली समिति की सिफारिशों के आधार पर तैयार किया गया है विधेयक : विधेयक में एक नया अनुच्छेद 82(ए) (लोकसभा और सभी विधानसभाओं के लिए एक साथ चुनाव) जोड़ा गया है और अनुच्छेद 83 (संसद के सदनों की अवधि), अनुच्छेद 172 (राज्य विधानसभाओं की अवधि) और अनुच्छेद 327 (विधानसभाओं के चुनावों के संबंध में प्रावधान करने की संसद की शक्ति) में संशोधन किया गया है। संविधान (129वां संशोधन) विधेयक का मसौदा पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद की अध्यक्षता वाली उच्च स्तरीय समिति की सिफारिशों के अनुसार तैयार किया गया है।

विधेयक के अनुसार, यदि लोकसभा या किसी राज्य या केंद्र शासित प्रदेश की विधानसभा पूर्ण कार्यकाल समाप्त होने से पहले भंग हो जाती है, तो केवल उस विधानसभा के लिए पांच साल के शेष कार्यकाल के लिए मध्यावधि चुनाव कराए जाएंगे।

'राहुल की वजह से संविधान की बात कर रही भाजपा', विपक्ष का आरोप, भाजपा बोली- उनका मकसद इसे बर्बाद करना

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार शाम को लोकसभा में संविधान पर चर्चा का जवाब देते हुए अपने भाषण में कांग्रेस और गांधी परिवार पर जमकर हमला बोला। अब प्रधानमंत्री के भाषण पर राजनीतिक प्रतिक्रियाएं आनी भी शुरू हो गई हैं। गौरतलब है कि पीएम मोदी ने लोकसभा में दिए अपने भाषण में गांधी परिवार पर संविधान को कमजोर करने और राजनीतिक हित के लिए बार-बार संविधान में संशोधन करने का आरोप लगाया।

संजय राउत ने पीएम मोदी के दावे पर उठाए सवाल : प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में कहा कि भ्रष्टाचार के

प्रति उनकी जीरो टोलरेंस की नीति है। इसे लेकर जब शिवसेना यूबीटी नेता संजय राउत से सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि 'उन्हें (पीएम मोदी) अजित पवार को पार्टी से हटाना चाहिए..एकनाथ शिंदे, सबसे भ्रष्ट नेताओं में से एक हैं। उन्हें अपने आप से पूछना चाहिए कि वे कितने भ्रष्ट नेताओं से घिरे हुए हैं। वे अदाणी को झेल रहे हैं और वे जीरो टोलेरेंस की बात कर रहे हैं! प्रधानमंत्री जो कहते हैं, वो कभी नहीं करते।'

'प्रधानमंत्री ने पूर्व प्रधानमंत्रियों के खिलाफ गलत शब्दों का इस्तेमाल किया' : कांग्रेस नेता उदित राज ने प्रधानमंत्री के भाषण पर कहा कि 'मैंने उनके 11 संकल्पों के बारे में पढ़ा है, वो सब झूठ है। वे 2014 से ही ये बातें कर रहे हैं, लेकिन कुछ नहीं हुआ।

प्रधानमंत्री ने कल बहुत बड़ा झूठ बोला कि कांग्रेस यूनिट सरदार पटेल को प्रधानमंत्री बनाना चाहती थीं, लेकिन इसे लेकर कभी चुनाव ही नहीं हुए। गांधी जी ने पहले ही प्रधानमंत्री का चयन कर लिया था। सरदार पटेल भी नेहरू को अपना नेता मानते थे और उनका बहुत सम्मान करते थे।

वायनाड भूस्खलन आपदा के घावों पर मिर्च छिड़क रही है केंद्र सरकार

केरल के वित्त मंत्री ने बोला हमला

केरल। केरल के वित्त मंत्री केएन बालगोपाल ने रविवार को वायनाड भूस्खलन के दौरान भारतीय वायु सेना (आईएएफ) की तरफ से किए गए आपदा राहत और बचाव कार्यों के लिए भुगतान की मांग करने के लिए केंद्र सरकार की आलोचना की। उन्होंने इस कदम को आपदा के बाद पहले से ही बोझ तले दबे राज्य के 'जख्मों पर मिर्च छिड़कने' जैसा बताया। कोच्चि में पत्रकारों से बात करते हुए वित्त मंत्री बालगोपाल ने भाजपा शासित केंद्र पर आपदा राहत के लिए राज्य को वादा किए गए धन को भी मुहैया कराने में 'विफल' रहने का आरोप लगाया। वित्त मंत्री ने आरोप लगाया कि यह राज्य के लोगों का मजाक उड़ाने जैसा है।

'यह दृष्टिकोण गंभीर घाव पर मिर्च छिड़कने जैसा': उन्होंने कहा, इस तरह के दृष्टिकोण के अलावा, वायु सेना के नाम पर एक नया विधेयक पेश किया गया है। मंत्री बालगोपाल ने कहा, 'वास्तव में, यह दृष्टिकोण गंभीर घाव पर मिर्च छिड़कने जैसा है।' उन्होंने केरल को प्रभावित करने वाले मुद्दे पर केंद्रीय मंत्री सुरेश गोपी और पूर्व केंद्रीय मंत्री वी मुरलीधरन समेत भाजपा नेताओं के रुख पर भी सवाल उठाया।

मुख्य सचिव को पत्र मिलने के बाद बरसे वित्त मंत्री : मंत्री बालगोपाल ने ये टिप्पणियां 22 अक्तूबर, 2024 के एक पत्र के बारे में पूछे गए सवालों के जवाब में कीं, जिसका शीर्षक था 'बकाया एयरलिफ्ट शुल्क का निपटान', जिसे 2 नवंबर को तत्कालीन मुख्य सचिव वी वेणु के कार्यालय को मिला हुआ था। इसमें बकाया बिलों का विवरण था, जिसमें 2018 की बाढ़ के दौरान बचाव कार्यों से संबंधित 100 करोड़ रुपये से अधिक और वायनाड में 30 जुलाई को भूस्खलन के बाद भारतीय वायुसेना के संचालन के लिए 13 करोड़ रुपये से अधिक शामिल थे।

संभल में बुलडोजर एक्शन: हिंसाग्रस्त क्षेत्रों में तोड़े गए ढांचे, सपा सांसद और विधायक के इलाके में कार्रवाई

संभव। संभल में हिंसा के बाद पुलिस प्रशासन का लगातार एक्शन जारी है। हिंसा के बाद संभल के विभिन्न इलाकों में बुलडोजर कार्रवाई जारी है। अतिक्रमण हटाओ अभियान सपा विधायक इकबाल महमूद के मियासराय और सांसद जियाउर्रहमान बर्क के आवास के पास हिंदूपूरा खेड़ा में इलाके में हुई।

सालों पुरानी जामा मस्जिद के पास अतिक्रमण और बिजली चोरी के खिलाफ प्रशासन ने दूसरे दिन रविवार को भी बड़ा अभियान चलाया। यह कदम उस क्षेत्र में हिंसक झड़पों के बाद उठाया गया है। प्रशासन ने सुबह से क्षेत्र में अतिक्रमण हटाने का कार्य शुरू किया। इस दौरान, नखासा थाना क्षेत्र के तहत आने वाले घरों और दुकानों के बाहर बने नालों को साफ किया गया। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्रीश चंद्र ने बताया कि यह अभियान सार्वजनिक स्थानों को दोबारा स्थापित करने और नाली व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के उद्देश्य से चलाया गया है। इस अभियान के दौरान एक घर में घरेलू गैस सिलेंडरों का अवैध भंडारण भी सामने आया। आपूर्ति निरीक्षक योगेश शुक्ला ने बताया कि हाजी रब्बान के घर से 25 गैस सिलिंडर बरामद हुए, जिनमें से दो भरे हुए थे और बाकी खाली थे। परिवार ने इन्हें शादी के लिए बताया, लेकिन जरूरी दस्तावेज नहीं दिखा सके।

इन सिलेंडरों को जब्त कर लिया गया और एफआईआर दर्ज की जाएगी। इसी दौरान, बिजली विभाग ने भी क्षेत्र में बिजली चोरी के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की। अभियंता नवीन गौतम ने बताया कि दीपसराय में हुई छापेमारी में चार मस्जिदों और एक मदरसे में अवैध बिजली कनेक्शन मिले थे।

इन कनेक्शनों से 130 किलोवाट बिजली चोरी हो रही थी। इसका अनुमानित मूल्य करीब 1.25 करोड़ रुपये है। इस कार्रवाई के दौरान 49 व्यक्तियों की पहचान की गई है। उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज की जा रही हैं। इसी बीच बंद पड़े मंदिर में नियमित पूजा आरंभ हो गई है।

महंत आचार्य विनोद शुक्ला ने बताया कि भक्तगण अब मंदिर में पूजा करने और हनुमान चालीसा का पाठ कर रहे हैं। मंदिर की सुरक्षा के लिए पीएसी की तैनाती की गई है। जिलाधिकारी राजेंद्र पेंसिया ने बताया कि शाही जामा मस्जिद क्षेत्र में अव्यवस्था को सुधारने और अवैध गतिविधियों पर नियंत्रण लगाने के उद्देश्य से अभियान चलाया जा रहा है।

नाले में मिला लेखपाल का कटा हुआ सिर, हत्या कर घूम रहा था आरोपी

बरेली। कैंट थाना क्षेत्र में एसओजी टीम ने रविवार को बुखारा रोड के पास नाले से एक मानव सिर का कंकाल बरामद कर लिया। आरोपी की निशानदेही पर यह खोपड़ी बरामद हुई है। इसे लेखपाल के सिर का ही कंकाल बताया जा रहा है। हत्या की वजह को लेकर अधिकारी आरोपी नेता से पूछताछ कर रहे हैं। आरोपी फरीदपुर थाना क्षेत्र के गांव कपूरपुर का रहने वाला है।

करीब पंद्रह दिन से लापता फरीदपुर के लेखपाल मनीष कश्यप की हत्या कर दी गई थी। हत्या में लेखपाल के करीबी छुटभइये नेता ओमवीर का हाथ था। घटना करने के बाद आरोपी हरियाणा और दिल्ली इलाके में घूम रहा था। एसओजी टीम सर्विलांस के सहारे उसका पीछा कर रही थी।

मूलरूप से बहेड़ी के मोहल्ला अमरनाथ कॉलोनी निवासी लेखपाल मनीष कश्यप 27 नवंबर से लापता थे। वह फरीदपुर तहसील में तैनात थे। उनके मोबाइल फोन की अंतिम लोकेशन तहसील में ही मिली थी। इसके बाद उनका कोई सुराग नहीं

लगा। कॉल डिटेल से पता चला कि क्षेत्र के एक प्रधान से आखिरी बार बात हुई थी।

एसएसपी अनुराग आर्य ने अपहरण के मामले की विवेचना इंस्पेक्टर फरीदपुर राहुल सिंह से हटाकर इंस्पेक्टर फतेहगंज पश्चिमी प्रदीप चतुर्वेदी को दी थी। दरअसल, लेखपाल की मां ने एडीजी से शिकायत की थी कि फरीदपुर इंस्पेक्टर जानबूझकर मामले में ढिलाई बरत रहे हैं। इसके बाद विवेचक बदले गए। 19 दिन बाद पुलिस ने एक आरोपी को पकड़ा। उसकी निशानदेही पर सिर का कंकाल बरामद हुआ।

अयोध्या पहुंचे डिप्टी सीएम बृजेश पाठक, हनुमानगढ़ी में किया पूजन

बोले - मिल्कीपुर उपचुनाव में भाजपा की जीत तय

लखनऊ। यूपी के अयोध्या में रविवार को एक होटल के उद्घाटन पर उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक पहुंचे। यहां उन्होंने हनुमानगढ़ी में दर्शन-पूजन किया। प्रदेश के कल्याण और विकास के साथ लोगों के हित के लिए प्रभु हनुमंतलला के श्री चरणों में कामना की है। उन्होंने कहा कि मिल्कीपुर में जब भी उपचुनाव घोषित होंगे। भाजपा की विजय सुनिश्चित है।

यहां उन्हें सर्किट हाउस में स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा बैठक करनी थी। लेकिन, अपरिहार्य कारणों से इसे स्थगित करना पड़ा। अयोध्या एयरपोर्ट पर ही उन्होंने विभागीय अधिकारियों को महाकुंभ से लौटने वाले दर्शनार्थियों के साथ मकर संक्रांति और बसंत पंचमी मेला में आने वाले श्रद्धालुओं को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के निर्देश दिए।

समर्थकों ने उनका स्वागत किया

एयरपोर्ट पर मौजूद सीएमओ डॉ. संजय जैन ने बताया कि अयोध्या में आने वाले समय में होने वाले मेलों के लिए उपमुख्यमंत्री ने कई निर्देश दिए हैं, इनका पालन सुनिश्चित कराया जाएगा।

एयरपोर्ट पर भाजपा के वरिष्ठ नेता और डिप्टी सीएम के करीबी करुणाकर पांडेय ने समर्थकों के साथ उनका स्वागत किया। इस दौरान डिप्टी सीएम ने भाजपा नेता करुणाकर को मिल्कीपुर उपचुनाव में पूरी ताकत के साथ जुटने की जिम्मेदारी सौंपी।

दुनिया की सबसे ताकतवर महिलाओं की सूची में तीन भारतीय शामिल

राजनीति और उद्योग जगत का बड़ा नाम

नई दिल्ली। फोर्ब्स ने साल 2024 की दुनिया की सबसे ताकतवर महिलाओं की सूची जारी कर दी है। इस सूची में उद्योग, मनोरंजन, राजनीतिक, समाज सेवा और नीति नियंताओं के नाम शामिल हैं। फोर्ब्स की इस 21वीं सूची में तीन भारतीय महिलाओं के नाम भी शामिल हैं, जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में उल्लेखनीय काम किया है। आइए जानते हैं कि इस सूची में कौन-कौन से नाम हैं और क्या उनकी उपलब्धियां हैं।

निर्मला सीतारमण

भारतीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण फोर्ब्स की सबसे ताकतवर सूची में 28वें स्थान पर हैं। निर्मला सीतारमण ने मई 2019 में केंद्रीय वित्त मंत्री का पद संभाला था और उसके बाद से लगातार इस अहम पद पर बनी हुई हैं। निर्मला सीतारमण पर भारत के तेज आर्थिक विकास को बनाए रखने की जिम्मेदारी है और उनके नेतृत्व में भारत पांच खरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की राह पर है। निर्मला सीतारमण महिला सशक्तिकरण को लेकर मुखर रही हैं। राजनीति में आने से पहले सीतारमण ब्रिटेन की एग्रीकल्चर इंजीनियर्स एसोसिएशन और बीबीसी वर्ल्ड के साथ जुड़ी रहीं।

रोशनी नादर मल्होत्रा

दिग्गज आईटी कंपनी एचसीएल टेक्नोलॉजीज की चेयरपर्सन और एचसीएल कॉर्पोरेशन की सीईओ रोशनी नादर मल्होत्रा को फोर्ब्स की सबसे ताकतवर महिलाओं की सूची में 81वां स्थान दिया गया है। रोशनी नादर 12 अरब डॉलर की कंपनी के

रणनीतिक फैसले लेती हैं। रोशनी नादर मल्होत्रा शिव नदार फाउंडेशन की भी ट्रस्टी हैं और इसके जरिए शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रही हैं। रोशनी नादर ने द हैबीटेटस ट्रस्ट की स्थापना की, जो प्राकृतिक संरक्षण के लिए काम करती है।

किरन मजूमदार शॉ

किरन मजूमदार शॉ को फोर्ब्स की सबसे ताकतवर महिलाओं की सूची में 82वां स्थान दिया गया है। किरन मजूमदार बायोटेक कंपनी बायोकॉन की संस्थापक और चेयरपर्सन हैं। बायोकॉन की आज अमेरिका, एशिया के विभिन्न बाजारों समेत दुनिया भर में पहुंच है। किरन मजूमदार शॉ भारत के सबसे सफल उद्योगपतियों में से एक हैं। साल 2019 में किरन मजूमदार और उनके पति जॉन शॉ ने यूनिवर्सिटी ऑफ ग्लोसगो में कैंसर रिसर्च के लिए 75 लाख डॉलर का दान दिया था।

दैनिक
करंट क्राइम
सिर्फ सच...
www.currentcrime.com
03 • नई दिल्ली। सोमवार 16 दिसंबर -2024 दिल्ली व गाजियाबाद से एक साथ प्रकाशित

यातायात माह : ट्रैफिक पुलिस ने रिकॉर्ड तोड़ किए चालान

हेलमेट नहीं पहनने वालों पर की गई सबसे ज्यादा कार्रवाई

यातायात माह के दौरान प्रतिदिन काटे गए 4000 से ज्यादा चालान

गाजियाबाद, करंट क्राइम : पुलिस कमिश्नरेट सिस्टम गाजियाबाद के अंतर्गत यातायात पुलिस द्वारा नवंबर माह में यातायात सुरक्षा माह का आयोजन किया गया। यातायात माह के दौरान पुलिस कमिश्नरेट गाजियाबाद में ट्रैफिक पुलिस द्वारा लगभग डेढ़ लाख वाहन स्वामियों पर चालान वाली कार्रवाई की गई है। चालान की कार्रवाई में सबसे ज्यादा टारगेट पर दोपहिया वाहन चालक रहे, जो बिना हेलमेट के सफर पर निकलते थे। इसके साथ ही ट्रैफिक पुलिस के अधिकारियों से जानकारी मिली है कि प्रतिदिन लगभग 4000 लोगों पर चालान और नियम तोड़ने की कार्रवाई की जाती थी। इसके साथ ही यू-टर्न और रॉन्ग साइड आने वाले वाहन चालकों पर भी यातायात पुलिस का डंडा जमकर चला बताया जा रहा है। यातायात पुलिस द्वारा यातायात माह नवंबर में लाखों रुपए का राजस्व वसूली का टारगेट भी पूरा किया गया है। पुलिस कमिश्नरेट गाजियाबाद में कमिश्नरेट सिस्टम लागू होने के बाद से यातायात पुलिसकर्मियों की संख्या व ड्यूटी में इजाफा किया गया था, जिसका असर व लाभ अब नजर आ रहा है।

प्रमुख चौराहों पर हुई सर्वाधिक कारवाई

करंट क्राइम : यातायात पुलिस के अधिकारियों ने जानकारी दी है कि यातायात सड़क सुरक्षा माह के तहत नवंबर माह में लगभग डेढ़ लाख वाहन स्वामियों के चालान काटे गए हैं। इसमें दो पहिया वाहन सर्वाधिक हैं। साथ ही बिना हेलमेट के सफर करने वाले वाहन चालकों पर यातायात पुलिस के कैमरा और फोन की नजर रहती थी। शहर के प्रमुख चौराहों पर यातायात पुलिस की यह कार्रवाई नियम तोड़ने वालों के खिलाफ 30 दिनों तक चलाई गई। हालांकि अब पुलिस कमिश्नरेट सिस्टम लागू होने के बाद से प्रमुख चौराहों पर प्रतिदिन यातायात पुलिसकर्मी तैनात रहते हैं, जो नियम तोड़ने वालों के खिलाफ कार्रवाई करते हैं।

रॉन्ग साइड वालों से लेकर एनजीटी की अनदेखी करने वालों पर लगाया गया दंड

करंट क्राइम : यातायात माह के दौरान अलग-अलग प्रमुख स्थानों पर ट्रैफिक पुलिस के कर्मियों की ड्यूटी लगाई गई थी कि वह रॉन्ग साइड आने वाले दोपहिया और चार पहिया वाहन चालकों पर कार्रवाई करेंगे। दरअसल अधिकांश सड़क हादसे रॉन्ग साइड आने की वजह से होते हैं। तो वहीं बिना हेलमेट के सफर करने वालों के हादसे होने पर उनके जीवन लीला समाप्त हो जाती है। इसी को रोकने के मकसद से नवंबर माह में आयोजित यातायात माह के दौरान दोनों ही तरह के नियम तोड़ने वालों पर विशेष फोकस किया गया था। तो वहीं एनजीटी के निर्देशानुसार डीजल और पेट्रोल के वाहनों की लिमिट पूरी हो जाने वाले वाहन चालकों पर भी कार्रवाई की गई।

कोहरे के दौरान शुरू होगा रिफ्लेक्टर लगाओ अभियान

करंट क्राइम : यातायात पुलिस के एडीसीपी ट्रैफिक पीयूष कुमार सिंह का कहना है कि सर्दियों का मौसम शुरू हो चुका है और कोहरा भी पड़ने वाला है। ऐसे में यातायात पुलिस जल्द ही मोदीनगर, मुरादनगर, नेशनल हाईवे और जीटी रोड पर ट्रैक्टरों, ट्रॉली-ट्रक और ट्रोलों पर रिफ्लेक्टर लगाने का अभियान चलाएगी ताकि सड़क हादसों में कमी लाई जा सके और लोगों के जीवन को सुरक्षित किया जा सके।

किसी भी बात को लेकर मंडल वाले दावेदार ना हो परेशान

- अनुशासनहीता हो या उम्र का पड़ाव, जांच में उड़ जाएगा नाम

गाजियाबाद (करंट क्राइम)। मंडल अध्यक्ष वाले चुनाव आज फाइनल हो रहे हैं। आज ये लिस्ट लखनऊ पहुंच जाएगी। राजनीति इसी का नाम है जब अपने से ज्यादा दूसरे में कमियां देखी जाती है। जिस मंडल में दावेदारी की सबसे ज्यादा मारामारी है उनमें शालीमार मंडल भी है। यहां से 9 लोगो ने नामांकन किया है। नामांकन करने वालों में पूर्व पार्षद योगेश चौधरी, सोनू राजपूत, नरेश देवरानी, हरीश गौड़, अमित बघेल, मानू राघव, आश पंवार, केशव सक्सेना, अशोक प्रजापति शामिल हैं।

शालीमार गार्डन के इस मंडल में कई बातों को लेकर दंगल वाली स्थिति है। कहीं उम्र वाला कॉलम संदेह के घेरे में है तो कहीं अनुशासनहीनता के मामले बताए जा रहे हैं। अब इस बात को लेकर शोर है कि जब नामांकन पत्र में कमी है तो फिर चुनाव अधिकारी ने इन पत्रों को क्यों स्वीकार कर लिया। दावेदारों को ये डाउट है कि अगर कमी वाला पर्चा भी स्वीकार हो गया तो क्या होगा। इस मामले को लेकर गहमागहमी चल रही है। इस संबंध में दैनिक करंट क्राइम ने शालीमार गार्डन मंडल के चुनाव अधिकारी वरिष्ठ भाजपा नेता डॉ. वीरेश्वर त्यागी से बात की। उन्होंने कहा कि सभी कार्यकर्ता निश्चिंत रहे और यह अभी जांच का विषय है। आवेदन कोई भी कर सकता है और सभी के बायोडाटा स्वीकार किये गए हैं, लेकिन स्क्रीनिंग के दौरान ये नाम अपने आप आउट हो जाएंगे। उन्होंने कहा कि पार्टी फॉर्मेट में आयु का क्राइट एरिया स्पष्ट है। मंडल अध्यक्ष के लिये 35 से 45 आयु वर्ग रखी है। यदि किसी की आयु ज्यादा है और उसने आवेदन भी किया है तो जाच में ये नाम अपने आप उड़ जाएंगे। उन्होने कहा कि दावेदारों को परेशान होने की जरूरत नहीं है क्योंकि कई नाम ऐसे भी हैं जिन्होंने पार्टी के विरुद्ध जाकर काम किया है, अनुशाहीनता के मामले हैं, ये सब बाते जांच में आ जाएगी। इसलिए दावेदारों को ज्यादा परेशान होने की जरूरत नहीं है। अभी तो लिस्ट लखनऊ जाएगी और अभी जांच की प्रक्रिया से ये सभी आवेदन गुजरेंगे।

बलदेवराज शर्मा को देखने के लिये इंदिरापुरम में उमड़ पड़ी भीड़

क्यों दिया उन्होंने अपना व्हॉट्सएप नंबर और मुलाकात के लिये कह दिया इसकी नहीं है कोई नीड

गाजियाबाद (करंट क्राइम)। बलदेवराज शर्मा भाजपा के उस दौर के नेता हैं जिस दौर में पंडित दीनदयाल उपाध्याय, श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भाजपा को सींचा था। बलदेवराज शर्मा उस दौर से लेकर आज के दौर तक सक्रिय राजनीति का चेहरा है। उम्र के इस दौर में वो युवाओं को पीछे छोड़ रहे हैं। पार्टी के हर कार्यक्रम में उनकी मौजूदगी होती है। राजनीति को सक्रिय तरीके से करते हैं। यही वजह है कि पूर्व दर्जाप्राप्त राज्यमंत्री बलदेवराज शर्मा को मंडल में भी जिम्मेदारी मिली है। क्योंकि पार्टी जानती है कि वो बलदेवराज शर्मा है उन्हें जो जिम्मेदारी मिलेगी उसे वो पूरा करेंगे।

संगठन चुनाव चल रहे हैं और वरिष्ठ भाजपा नेता पूर्व दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री बलदेवराज शर्मा को इंदिरापुरम मंडल का चुनाव अधिकारी बनाया गया है। भाजपा में हालांकि संगठन चुनाव में आपसी सहमति एक शब्द है, लेकिन चुनाव अधिकारी के सामने दावेदारी का अपना जलवा है। रविवार को इंदिरापुरम की शिप्रा रिवेरा सोसायटी के लोग हैरान, गेट के गार्ड हैरान और आते जाते लोग हैरान। यहां भाजपा का मंडल कार्यालय है। मंडल अध्यक्ष हरमीत बख्शी हैं। रविवार को अचानक इंदिरापुरम के मंडल कार्यालय पर भीड़ उमड़ पड़ी। दोपहर दो बजे का समय था और अचानक से यहां भाजपाई आने लगे। भीड़ बढ़ने लगी। भीड़ बलदेवराज शर्मा को देखना चाहती थी, मिलना चाहती थी। आम आदमी की समझ में नहीं आ रहा था कि माजरा क्या है। यहां मंडल अध्यक्ष हरमीत बख्शी भी पहुंचे और तब ये पता चला कि भाजपा के मंडल दावेदारों में बलदेवराज शर्मा के आने की खबर पहुंची थी। चूंकि वो मंडल के चुनाव अधिकारी हैं लिहाजा जंगल में आग की तरह ये आग फैल गई कि इंदिरापुरम मंडल के चुनाव हो रहे हैं और चुनाव अधिकारी बलदेवराज शर्मा आए हैं। मंडल के दावेदारों ने जैसे ही यह खबर सुनी सब दौड़ पड़े। दावेदारी तो दौड़े ही दौड़े उनके समर्थक भी मंडल कार्यालय की ओर दौड़े। अब यहां इतनी भीड़ देखकर बलदेवराज शर्मा भी हैरान रह गए।

भाजपा का एक पूरा युग देख चुके, सरकार में दर्जाप्राप्त राज्यमंत्री रह चुके, कई पदों पर रह चुके वरिष्ठ भाजपा नेता बलदेवराज शर्मा भी हैरान थे और वो बेहद सरल और सहज व्यक्तित्व के नेता हैं। उसी सरलता के साथ वो बाहर आए और उन्होंने बाहर खड़ी भीड़ को स्पष्ट किया कि यहां चुनाव नहीं हो रहा है, मैंने सबके विचार लिये हैं। इसके बाद भी वहां मौजूद दावेदारों और समर्थकों ने ये जिद की कि हमारी भी राय ली जाए। तब बलदेवराज शर्मा ने बेहद सरल और विनम्र अंदाज में सभी दावेदारों को बताया कि 70 कार्यकताओं की राय ली जा चुकी है। दोपहर दो बजे से चार बजे का समय सभी से मिलने के लिये था। इस पर भी जब सभी ने जिद की तो यहां वरिष्ठ भाजपा नेता और चुनाव अधिकारी बलदेवराज शर्मा ने सभी से कहा कि वह मेरा मोबाइल नंबर नोट कर लें और अपनी प्रतिक्रिया, अपनी राय मेरे व्हॉट्सएप नंबर पर भेज दें। मैं उन सभी राय को भी संगठन को प्रेक्षित कर दूंगा।

पार्षद, पूर्व पार्षद, बूथ अध्यक्ष बुलाए गए थे मंडल कार्यालय पर

भाजपा में मंडल चुनाव चल रहे हैं और आज मंडल वाली लिस्ट लखनऊ के लिये रवाना हो जाएगी। रविवार को इंदिरापुरम भाजपा मंडल कार्यालय पर क्षेत्र के पार्षदों को, पूर्व पार्षदों को, बूथ अध्यक्षों को और विभिन्न मोर्चों के मंडल पदाधिकारियों को बुलाया गया था, लेकिन जब यहां चुनाव होने की बात फैली तो सभी लोग भाजपा मंडल कार्यालय आ गए। बताया जाता है कि यहां मंडल अध्यक्ष के लिये दावेदारों में पूर्व पार्षद मंजुला गुप्ता, सागर रावत, उमाशंकर तोमर और हरमीत बख्शी का नाम प्रमुखता से चर्चा में है।

'कौन बनेगा भाजपा संगठन का सरताज'

महानगर अध्यक्ष पद की दावेदारी में मंत्री प्रतिनिधि सौरभ जायसवाल का भी आगाज

कहा- मंडल अध्यक्ष से लेकर महानगर और क्षेत्र की टीम में दायत्वि पर रहकर किया है काम

गाजियाबाद (करंट क्राइम)। महानगर अध्यक्ष पद को लेकर भाजपा में सीन दावेदारी का चल रहा है। ओबीसी चेहरे दावेदारी कर रहे हैं। वैश्य चेहरों की ओर से दावेदारी है। वरिष्ठता के आधार पर दावेदारी है, ट्रैक रिकॉर्ड के आधार पर दावेदारी है। दावेदारी की इस रेस में आज बात एक ऐसे फेस की हो रही है जो सभी फॉर्मेट में अपनी एंट्री करवा चुके हैं। ये दावेदार सौरभ जायसवाल हैं। वो ओबीसी में भी आते हैं और वैश्य फैक्टर में भी आते हैं। वो संगठन वाले प्रोफाइल से भी आते हैं और वो जनप्रतिनिधियों के साथ जुड़ाव वाले स्टाइल में भी आते हैं। उन्होंने महानगर की टीम में भी पद संभाला है। वो क्षेत्रीय टीम में भी रहे हैं और वो भाजपा की प्रदेश टीम में भी रहे हैं।

महानगर अध्यक्ष पद की दावेदारी में सौरभ जायसवाल का नाम शामिल है। सौरभ जायसवाल मंडल अध्यक्ष रहे हैं। वो भाजपा के नेहररूनगर मंडल के अध्यक्ष रहे हैं। वो महानगर के मीडिया प्रभारी रहे हैं और वो भाजपा की महानगर टीम में भाजपा के महानगर कोषाध्यक्ष रह चुके हैं। वो भाजपा पश्चिम क्षेत्र की आईटी टीम के क्षेत्रीय मीडिया प्रभारी रहे हैं। वो भाजपा व्यापार प्रकोष्ठ के महानगर मंत्री रहे हैं। वो भाजपा किसान मोर्चा के पश्चिम क्षेत्र के क्षेत्रीय मीडिया प्रभारी रहे हैं। सौरभ जायसवाल भाजपा के ओबीसी मोर्चा के प्रदेश मीडिया प्रभारी हैं। वो राज्यसभा सांसद अनिल अग्रवाल के मीडिया सलाहकार रहे हैं। मौजूदा समय में वो राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार नरेंद्र कश्यप के मंत्री प्रतिनिधि के रूप में काम कर रहे हैं। सौरभ जायसवाल भाजपा का पुराना चेहरा हैं। उन्होंने हमेशा भाजपा के हर आंदोलन में आयाम में भाग लिया है। उन्हें संगठन से लेकर सरकार तक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से काम करने का अनुभव है। मंडल से लेकर प्रदेश तक में जिम्मेदारी संभालने वाले सौरभ जायसवाल अब महानगर की कमान संभालना चाहते हैं। वो महानगर अध्यक्ष पद की दावेदारी कर रहे हैं। उनका कहना है कि यदि उन्हें मौका दिया जाएगा तो बेहतर ढंग से काम करेंगे। उन्होंने कहा कि मैं भाजपा का समर्पित कार्यकर्ता हूं। भाजपा की रीति-नीति से पूरी तरह परिचित हूं। अनुभव और योग्यता के आधार पर मेरी दावेदारी बनती है।

महानगर अध्यक्ष के सलेक्शन में लेनी चाहिए इलेक्शन जीते हुए की राय

- पूर्व सांसद अनिल अग्रवाल और पूर्व मेयर अशु वर्मा ने कई बिंदु बताए

गाजियाबाद (करंट क्राइम)। भाजपा में संगठन चुनाव चल रहे हैं। मंडल चुनाव आज हो जाएंगे और मंडल के बाद महानगर अध्यक्ष का चुनाव है। महानगर अध्यक्ष चुनाव को लेकर भाजपा में राय शुमारी वाली बात पर विचारों की मारामारी मच गई है। चार बार के सांसद रहे रमेश चंद तोमर ने जब ये कहा कि महानगर अध्यक्ष किसी का जेबी नहीं होना चाहिए] वो ईमानदार होना चाहिए और वो जनता के बीच का होना चाहिए] इस पर लोकसभा सांसद अतुल गर्ग ने कहा मैं पूर्व सांसद रमेश चंद तोमर की बात से सहमत हूं और उन्होंने ये भी कहा कि संगठन अध्यक्ष के चुनाव में जनप्रतिनिधियों का कोई दखल होना ही नहीं चाहिए। दखल वाली बात पर प्रतिक्रिया की चहल-पहल है। एमएलसी दिनेश गोयल ने कहा कि चलो मैं दखल नहीं दूंगा लेकिन बाकी जनप्रतिनिधि दखल देंगे ही देंगे। मेयर सुनीता दयाल ने कहा कि पार्टी ने तो निर्देश दिये हैं कि जनप्रतिनिधियों की संस्तुति ली जाए] जो कुछ कहा गया वो भाजपा की रीति&नीति के अनुरूप है। भाजपा में कौर कमेटी की प्रथा है] भाजपा में सामूहिक फैसलों की प्रथा है। ऐसे में जनप्रतिनिधियों के दखल होनी चाहिए इसे लेकर भाजपा के पूर्व प्रतिनिधियों ने भी अपनी राय रखी। पूर्व राज्यसभा सांसद अनिल अग्रवाल ने अपनी बात कही और पूर्व मेयर अशु वर्मा ने अपना पक्ष रखा।

जनप्रतिनिधि भी भाजपा कार्यकर्ता और फ्री एण्ड फेयर होना चाहिए चुनाव : पूर्व राज्यसभा सांसद अनिल अग्रवाल ने कहा कि जनप्रतिनिधि भी भाजपा का कार्यकर्ता होता है] जनप्रतिनिधि भाजपा के सक्रिय सदस्य होते हैं। उन्होंने कहा कि मेरा ये मानना है कि फ्री एण्ड फेयर चुनाव होना चाहिए और इसमें किसी की भी दखल नहीं होनी चाहिए। दखल शब्द पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि फ्री एण्ड फेयर शब्द में सभी चीजों का समावेश है। जब कोई अध्यक्ष कार्यकताओं के वोट से जीतता है तो उसका अलग एहसास होता है। दखल नहीं होना चाहिए की बात पर पूर्व राज्यसभा सांसद अनिल अग्रवाल ने कहा कि यह लोकसभा सांसद अतुल गर्ग का अपना व्यू है। उनका सोचना है कि जनप्रतिनिधि का दखल नहीं होना चाहिए और मेरा मानना है कि फ्री एण्ड फेयर चुनाव होना चाहिए। चुनाव में भी आम सहमति होती है और इसी आम सहमति में सब लोग आते हैं। इस आम सहमति में जनप्रतिनिधि भी आते हैं।

पूर्व मेयर अशु वर्मा ने नहीं रखा सांसद अतुल गर्ग की बात से इत्तिफाक, कहा- ना उन्हें बाहर किया ना उनके इशारे पर कोई बने

पूर्व मेयर अशु वर्मा ने अध्यक्ष पद में जनप्रतिनिधि के दखल वाले सवाल पर कहा कि क्या जनप्रतिनिधि भाजपा में नहीं है। पूर्व मेयर अशु वर्मा ने सांसद अतुल गर्ग की बात पर इत्तिफाक नहीं जताया। उन्होंने कहा कि जनप्रतिनिधि भी भाजपा कोर कमेटी के सदस्य होते हैं। उनकी राय का अपना महत्व है। संगठन की रचना में सर्वसहमति जरूरी है। जब सर्वसहमति की बात आ रही तो जनप्रतिनिधि को इससे बाहर कैसे किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि इस बात पर फोकस होना चाहिए कि ना तो जनप्रतिनिधि को इस दायरे से बाहर किया जाए कि उनकी कोई दखल ही ना हो और ऐसा भी नहीं होना चाहिए कि जनप्रतिनिधि के इशारे पर कोई बन जाए। आपसी समन्वय बनाकर काम होना चाहिए। संगठन जनप्रतिनिधियों के लिये नहीं होता है। संगठन ऐसा होना चाहिए जो आने वाले समय की चुनौतियों के लिए तैयार हो। 2017 के चुनावी रण के लिये संगठन की रचना हो रही है। इसलिए सबकी राय होनी चाहिए] सबकी सहमति होनी चाहिए।

संपादकीय

मोटापे की दवाएं

संसार में मोटापा एक बड़ी समस्या ही नहीं, बल्कि एक बड़े रोग की तरह फैल रहा है और ऐसे में, मोटापे की दवा खोजने में लगे वैज्ञानिकों का सम्मान सुखद व स्वाभाविक है। वैसे तो मोटापे की दवा खोजने के अभियान में अनेक वैज्ञानिकों का योगदान रहा है, पर उनमें से तीन वैज्ञानिकों को इस वर्ष के प्रतिष्ठित लास्कर पुरस्कार के लिए चुना गया है। सबसे कामयाब मोटापा-विरोधी दवाओं को विकसित करने में शामिल इन तीन वैज्ञानिकों के बारे में माना जा रहा है कि इन्हें चिकित्सा का नोबेल भी मिलेगा। आमतौर पर लास्कर पुरस्कार जीतने वाले वैज्ञानिक को ही नोबेल दिया जाता है। ये तीन सम्मानित वैज्ञानिक हैं- जोएल हेबेनर, स्वेतलाना मोजसोव और लोते बेजरे नुडसन। इनके द्वारा निर्मित दवा दरअसल ग्लूकागन- जैसे पेप्टाइड 1 (जीएलपी-1) नामक हार्मोन की नकल करती है, इससे रक्त-शर्करा के स्तर को कम करने और भूख नियंत्रित करने में मदद मिलती है। क्लिनिकल-अनुसंधान श्रेणी में लास्कर से सम्मानित इन तीनों वैज्ञानिकों को 2,50,000 अमेरिकी डॉलर की राशि मिलेगी। वास्तव में, बायोमेडिकल वैज्ञानिक जीएलपी-1 अनुसंधान की बढ़ती मान्यता से उत्साहित हैं। इसका मकसद शुरूआत में मधुमेह का इलाज करना था और मधुमेह के इलाज की तलाश में मोटापे की दवाएं हाथ लगी हैं।

गौर करने की बात है कि मोटापा के मोर्चे पर वैज्ञानिक लंबे समय से काम कर रहे हैं। शल्य क्रिया के अलावा कुछ दवाएं भी उपलब्ध हैं, जो मोटापे को घटाने में मदद कर सकती हैं। मोटापे के खिलाफ नई कामयाबी से यह पता चला है कि जीएलपी-1 आधारित दवाएं सिर्फ मोटापे और मधुमेह का इलाज नहीं करती हैं। वे हृदय रोग, किडनी रोग के इलाज में भी मददगार हो सकती है। इन दवाओं का इस्तेमाल स्लीप एपनिया में भी हो सकता है। इधर, स्लीप एपनिया के मामले बढ़ रहे हैं, मतलब, सोते समय सांस रुक-रुककर चलने की शिकायत बढ़ रही है। वास्तव में, एक अच्छी दवा जब बनती है, तो उसका व्यापक प्रयोग या उपयोग सामने आता है। जीएलपी-1 आधारित दवाओं पर और काम करने की जरूरत है, ताकि ज्यादा सुरक्षित दवाएं लोगों तक पहुंच पाएं।

वास्तव में, मोटापे पर दुनिया के अनेक वैज्ञानिक काम कर रहे हैं और तरह-तरह के शोध सामने आ रहे हैं। एक ताजा शोध से यह पता चलता है कि मोटापा भूख से जुड़े न्यूरॉन्स के आसपास आणविक जाल के निर्माण से प्रेरित होता है। यह भी पता चला है कि प्रोटीन और शर्करा के एक नेटवर्क का संचय, जिसे बाह्य कोशिकीय मैट्रिक्स कहा जाता है, इंसुलिन को भूख नियंत्रित करने वाले न्यूरॉन्स तक पहुंचने से रोकता है, इससे मोटापे को बल मिलता है। मोटापे से जुड़ी एक खबर यह भी है कि दुनिया भर में लाखों वयस्क वजन कम करने के लिए वेगोवी जैसी शक्तिशाली दवाएं ले रहे हैं, पर क्या बच्चों को भी ऐसा करना चाहिए? दरअसल, बच्चों में बढ़ता मोटापा एक बड़ी समस्या है। वैज्ञानिकों ने अपने प्रयोग में पाया है कि यह दवा लेने पर मोटे बच्चों को लाभ होता है, पर अभी यह स्पष्ट नहीं है कि ये बच्चे जब बड़े होंगे, तब उनके साथ क्या होगा। कहीं ऐसा न हो कि बच्चों को बड़े होने के बाद भारी नुकसान उठाना पड़े। आज मोटापे की दवा अपनी जगह एक बड़ी जरूरत बन गई है, लेकिन ज्यादातर चिकित्सक यही चाहते हैं कि बच्चे हों या बड़े, स्वाभाविक या प्राकृतिक प्रयासों से ही अपना मोटापा घटाएं, इसी में स्थायी हित है।

बैंकिंग सिस्टम की सेहत में बड़ा सुधार, बीते 6 वर्षों में एनपीए 8.5 प्रतिशत घटा

नई दिल्ली, 15 दिसंबर। सरकार द्वारा किए गए नीतिगत बदलावों के कारण भारत के बैंकिंग सिस्टम में बड़ा सुधार देखने को मिला है और बीते 6 वर्षों से अधिक समय में शेड्यूल्ड कमर्शियल बैंकों के ग्रॉस एनपीए में 8.5 प्रतिशत से ज्यादा की गिरावट आई है।

वित्त मंत्रालय द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, देश के शेड्यूल्ड कमर्शियल बैंकों का ग्रॉस नॉन-परफॉर्मिंग एसेट्स (एनपीए) जून 2024 तक कम होकर 2.67 प्रतिशत रह गया है, जो कि मार्च 2018 तक 11.18 प्रतिशत था।

मंत्रालय द्वारा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर की गई एक पोस्ट में लिखा गया कि एसेट्स क्वालिटी में काफी सुधार आया है और इस कारण प्रोविजनल कवरेज रेश्यो (पीसीआर) जून 2024 तक सुधरकर 92.52 प्रतिशत हो गया है, जो कि मार्च 2015 में 49.51 प्रतिशत था।

एनपीए वह लोन है जिसने बैंकों के लिए एक निश्चित अवधि के लिए मूल राशि पर आय या ब्याज पैदा नहीं की है। अगर लोन लेने वाले व्यक्ति ने कम से कम 90 दिनों तक ब्याज या मूल राशि का भुगतान नहीं किया है, तो बैंक द्वारा मूल राशि को एनपीए घोषित कर दिया जाता है।

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा हाल में किए गए स्ट्रेस टेस्ट के परिणाम से पता चला है कि शेड्यूल्ड कमर्शियल बैंकों में पर्याप्त पूंजी हैं और सभी पक्षकार किसी भी अतिरिक्त पूंजी निवेश के अभाव में भी बड़े आर्थिक झटकों को सहन करने में सक्षम हैं।

प्रोविजनल कवरेज रेश्यो (पीसीआर) वह रेश्यो या राशि होती है, जो कि बैंक द्वारा खराब लोन से हुए नुकसान को रिकवर करने के लिए रखी जाती है।

एनपीए कम होने के साथ शेड्यूल्ड कमर्शियल बैंकों के मुनाफे में भी बड़ा उछाल देखने को मिला है।

वित्त वर्ष 2023-24 में सभी शेड्यूल्ड कमर्शियल बैंकों ने मिलकर 23.50 लाख करोड़ रुपये का मुनाफा दर्ज किया था, जो कि वित्त वर्ष 2022-23 में 22.63 लाख करोड़ रुपये था।

इसके अलावा सरकारी बैंकों के ग्रॉस एनपीए में भी कमी देखने को मिली है और यह सितंबर 2024 में यह घटकर 3.12 प्रतिशत हो गया है, जो कि मार्च 2015 में 4.97 प्रतिशत और मार्च 2018 में अपने पीक पर 14.58 प्रतिशत था।

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा हाल में किए गए स्ट्रेस टेस्ट के परिणाम से पता चला है कि शेड्यूल्ड कमर्शियल बैंकों में पर्याप्त पूंजी हैं और सभी पक्षकार किसी भी अतिरिक्त पूंजी निवेश के अभाव में भी बड़े आर्थिक झटकों को सहन करने में सक्षम हैं।

पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना में हुए 6.85 लाख इंस्टॉलेशन

नई दिल्ली, 15 दिसंबर। प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना लॉन्च होने के एक साल के अंदर ही सोलर इंस्टॉलेशन का आंकड़ा पिछले एक दशक के हुए कुल इंस्टॉलेशन के करीब पहुंच गया है। इस वर्ष फरवरी में शुरूआत के बाद से प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के तहत 685,763 इंस्टॉलेशन किए गए हैं, जो पहले ही एक दशक में स्थापित किए गए इंस्टॉलेशन का 86 प्रतिशत है।

प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना में सबसे ज्यादा मांग 3-5 किलोवॉट सेगमेंट की है, जो कुल इंस्टॉलेशन का 77 प्रतिशत है। वहीं, 14 प्रतिशत मांग 5 किलोवाट से ज्यादा के सेगमेंट की है। गुजरात में सबसे अधिक इंस्टॉलेशन हुए हैं। इसके बाद महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और केरल का स्थान है। इस पहल के तहत गुजरात में सबसे अधिक 2,86,545 सोलर इंस्टॉलेशन लगाए गए। महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश में क्रमशः 1,26,344 और 53,423 सोलर इंस्टॉलेशन हुए हैं।

सरकार द्वारा संसद में दी गई जानकारी के मुताबिक, प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के तहत 1.45 करोड़ पंजीकरण हुए हैं। इस स्कीम का उद्देश्य मार्च 2027 तक एक करोड़ से ज्यादा घरों को सोलर पावर की आपूर्ति देना है। इस योजना को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा वित्त वर्ष 2027 तक 75,021 करोड़ रुपये के आवंटित बजट के साथ आवासीय क्षेत्र में 1 करोड़ रूफटॉप सोलर पावर सिस्टम लगाने के उद्देश्य से लॉन्च किया गया था। फिलहाल, जिन राज्यों में इंस्टॉलेशन की संख्या बढ़ रही है उनमें त्रिपुरा, झारखंड, अरुणाचल प्रदेश और मणिपुर शामिल हैं। प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना को जमीनी स्तर पर लोकप्रिय बनाने के लिए शहरी स्थानीय निकायों और पंचायतों को अपने अधिकार क्षेत्र में रूफटॉप सोलर सिस्टम को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया गया है।

भारत के कुल निर्यात में अमेरिका की हिस्सेदारी वित्त वर्ष 24 में 18 प्रतिशत रही

नई दिल्ली, 15 दिसंबर। भारत के कुल निर्यात में अमेरिका की हिस्सेदारी वित्त वर्ष 24 में 18 प्रतिशत रही है और इसमें लगातार इजाफा देखने को मिल रहा है, यह जानकारी एक रिपोर्ट में दी गई। बैंक ऑफ बड़ौदा की रिपोर्ट में बताया गया कि भारत का अमेरिका को निर्यात लगातार बढ़ रहा है। वित्त वर्ष 24 में इसकी वैल्यू 77.5 अरब डॉलर थी। बीते 30 वर्षों से भारत द्वारा अमेरिका को निर्यात में 10.3 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) से इजाफा हो रहा है।

रिपोर्ट के मुताबिक, वित्त वर्ष 2000 तक अमेरिका को होने वाले निर्यात की वृद्धि दर कुल एक्सपोर्ट की विकास दर से अधिक थी, लेकिन 2008 के वित्तीय संकट के बाद वित्त वर्ष10 तक यह धीमी रही। तब से अमेरिका को होने वाले निर्यात की वृद्धि दर कुल एक्सपोर्ट विकास दर से अधिक रही है, यह दिखाता है कि भारत के लिए अमेरिका एक अहम बाजार है। रिपोर्ट के अनुसार, वित्त वर्ष 24 में भारत के कुल निर्यात में अमेरिका की हिस्सेदारी 18 प्रतिशत रही है और वित्त वर्ष 92 में यह 16.4 प्रतिशत थी। हालांकि, यह अभी भी वित्त वर्ष 2000 के उच्चतम स्तर 22.8 प्रतिशत से नीचे हैं। इस रिपोर्ट में सलाह भी दी गई है कि भारत को निर्यात के लिए एक देश पर अधिक निर्भरता कम करनी चाहिए और निर्यात में विविधता पर जोर देना चाहिए। रिपोर्ट में आगे कहा गया कि अमेरिका कई प्रमुख भारतीय उद्योगों के लिए एक महत्वपूर्ण बाजार बना हुआ है। वित्त वर्ष 2024 में अमेरिका को निर्यात की जाने वाली शीर्ष पांच वस्तुओं में दवाएं और फार्मास्यूटिकल्स, मोती और कीमती पत्थर, पेट्रो उत्पाद, दूरसंचार उपकरण और रेडीमेड गारमेंट्स शामिल थे, जिनका देश के कुल निर्यात में 40 प्रतिशत हिस्सा था।

भारत में प्रति व्यक्ति फलों और सब्जियों की उपलब्धता में वृद्धि

नई दिल्ली, 14 दिसंबर। एसबीआई रिसर्च रिपोर्ट के अनुसार, पिछले दशक में भारत में फलों और सब्जियों की प्रति व्यक्ति उपलब्धता में क्रमशः 7 किलोग्राम और 12 किलोग्राम की वृद्धि हुई है।

फलों और सब्जियों के प्रति व्यक्ति उत्पादन में मुख्य वृद्धि मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पंजाब और जम्मू-कश्मीर में हुई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष 227 किलोग्राम फल और सब्जियां पैदा करता है, जबकि सेवन के लिए जनरल रिकमेंडेशन प्रति व्यक्ति सालाना कम से कम 146 किलोग्राम है।

हालांकि, फलों के खराब होने की प्रकृति के साथ, कटाई, भंडारण, ग्रेडिंग और परिवहन के दौरान भी काफी मात्रा में फल नष्ट हो जाते हैं। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि खाद्यान्न उत्पादन पर जलवायु का प्रभाव नकारात्मक है। पिछले कुछ वर्षों में कृषि उत्पादन और सप्लाई चेन कई बार गर्मी और ठंड की लहरों से प्रभावित हुई है।

इन गर्मी और ठंड की लहरों का खाद्यान्न उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है क्योंकि अधिकांश राज्यों में खाद्यान्न उत्पादन और मौसम की स्थिति के बीच नकारात्मक संबंध है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनुसार, अनाज भरने की अवधि के दौरान तापमान में 30 डिग्री सेल्सियस से अधिक की हर 1 डिग्री सेल्सियस वृद्धि से गेहूं की उपज कम हो जाती है। रिपोर्ट में बताया गया है कि जलवायु परिवर्तन के इन दोहरावों ने खाद्य मुद्रास्फीति को भी 3-4 प्रतिशत तक बढ़ा दिया है।

बढ़ती अर्थव्यवस्था में विकास के हिस्से के रूप में, रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि व्यक्तिगत ऋण डेटा पिछले दशक में उत्तर प्रदेश और राजस्थान जैसे राज्यों में अधिक शहरीकरण का संकेत देते हैं।

भारत की कुल आबादी का लगभग एक तिहाई हिस्सा शहरों में रहता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि यह प्रवृत्ति पिछले दशक 2014-2024 में शहरीकरण में 5 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि दर्शाती है।

रिपोर्ट में कहा गया है, ₹यदि हम 'व्यक्तिगत ऋण' पर ऋण डेटा को देखें, तो यह बताता है कि उत्तर प्रदेश में लगभग 115 आधार अंक (बीपीएस) की वृद्धि हुई है, उसके बाद राजस्थान में 97 बीपीएस की वृद्धि हुई है। ऐसा लगता है कि इन राज्यों में शहरीकरण में वृद्धि हुई है, क्योंकि व्यक्तिगत ऋण की मांग ज्यादातर शहरी क्षेत्रों से होती है। जानकारों के अनुसार, शहरीकरण में इस वृद्धि से फलों और सब्जियों की मांग बढ़ेगी क्योंकि शहरों में बेहतर नौकरियों के साथ आय बढ़ेगी।

रोचक तथ्यों का करंट

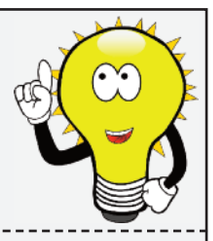

- मिक्की माउस का इटली में नाम टोपोलिनो है।
- एक केकड़े का खून रंगहीन होता है। ऑक्सीजन मिलने के बाद यह नीला हो जाता है।
- पक्षियों को निगलने के लिए ग्रेविटी की जरूरत होती है।>
- अंग्रेजी अल्फाबेट का सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला लेटर ए है।
- विश्व की दो सबसे अधिक कॉमन इस्तेमाल होने वाली भाषाएं मैंड्रियन चायनीज, स्पैनिश और अंग्रेजी है।
- बिल्ली के हर कान में 32 मसल्स होते हैं।
- पर्थ ऑस्ट्रेलिया का ऐसा शहर है जहां सबसे तेज हवा बहती है।
- इंसान की सबसे छोटी हड्डी कान में होती है।
- बिल्लियां अपनी जिंदगी का 66% हिस्सा सोते हुए गुजारती हैं।
- स्विट्जरलैंड में दुनिया में सबसे अधिक चॉकलेट खाई जाती है। यहां हर व्यक्ति एक साल में 10 किलो के औसत से चॉकलेट खाता है।
- पैसा ऐसी पहले नंबर की चीज है जिसके बारे में जोड़े सबसे अधिक बहस करते हैं।

राशिफल

- **मेष:** आराम व मनोरंजन के साधनों पर व्यय होगा। वैवाहिक प्रस्ताव प्राप्ति के योग हैं। राजकीय बाधा दूर होकर लाभ की स्थिति बनेगी।
- **वृष:** जीवनसाथी का सहयोग प्राप्त होगा। भेंट व उपहार पर व्यय हो सकता है। किसी मामले की चिंता रह सकती है।
- **मिथुन:** शारीरिक कष्ट की आशंका है। कार्य में विघ्न हो सकता है। वाणी पर नियंत्रण रखें। परीक्षा व साक्षात्कार इत्यादि में सफलता प्राप्त होगी।
- **कर्क:** पुराना रोग उभर सकता है। अपेक्षित कार्यों में विलंब होने से तनाव रहेगा। आवश्यक वस्तु गुम हो सकती है, सावधानी रखें।
- **सिंह:** व्यस्तता के चलते स्वास्थ्य खराब हो सकता है। खान-पान का ध्यान रखें। प्रयास सफल रहेंगे। कार्यसिद्धि से प्रसन्नता रहेगी। राजमान के योग हैं।
- **कन्या:** प्रतिद्वंद्विता में वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में परेशानी हो सकती है। मन तथा शरीर में थकान महसूस होगी। घर में अतिथियों का आगमन होगा। व्यय होगा।
- **तुला:** कोई बड़ा काम होने से प्रसन्नता रहेगी। भाग्य का साथ रहेगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। धन प्राप्ति व रोजगार में वृद्धि होगी।
- **वृश्चिक:** किसी मद में बड़ा खर्च हो सकता है। आर्थिक? स्थिति कमजोर हो सकती है। किसी के उकसाने में न आएं। महत्वपूर्ण निर्णय सोच-समझकर करें।
- **धनु:** आशंका-कुशंका के चलते निर्णय लेने की क्षमता कम होगी। थकान रह सकती है। बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे।
- **मकर:** लोगों की सहायता करने का अवसर प्राप्त होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। बिगड़े काम बनेंगे। उत्साह व प्रसन्नता से कार्य कर पाएंगे।
- **कुंभ:** किसी धार्मिक कार्यक्रम में हिस्सा लेने का अवसर मिल सकता है। आत्मिक शांति रहेगी। किसी विवाद में विजय प्राप्त होगी। धन प्राप्ति सुगम होगी।
- **मीन:** वाहन, मशीनरी व अग्नि आदि के प्रयोग में सावधानी रखें। विशेषकर युवा वर्ग लापरवाही न करें। भागदौड़ अधिक होगी।

चुटकुले

एक लड़का इंटरनेट पर सर्च करते हुए लिखता है।
'हाऊ टु इंग्रेस अ गर्ल इफ वीक इन इंग्लिश जवाब मिला...
ओए, सुधर जाओ, खेती बाड़ी कर लेओ जेमे फायदा,
मोड़ी पटावे में कछु नाई धरो, जायदाद बिक जेहे जे चक्करन मा, और जूता पड़िहैं, वै अलग।

राकेश- यार तू अपनी बीवी को किस नाम से बुलाता है?
रमेश- गूगल
राकेश- ये कैसा नाम हुआ।
रमेश- क्या करूं, सवाल एक करता हूं और जवाब 100 मिलते हैं।

पिता- नालायक, तू फिर फेल हो गया, आज से कभी मुझे पापा मत कहना
टीटू- ओह कमऑन डैड, स्कूल टेस्ट ही तो था, कोई डीएनए टेस्ट थोड़ी न था।

करंट क्राइम
जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं

16 12 2024

आज के जन्मदिन

सेलेब्रिटी जन्मदिन

रितिका सिंह
अभिनेत्री

प्रदीप चौहान बाल्मीकि

अनुप्रिया

दीपिका शर्मा

मंजू गर्ग

सोनिया गुप्ता

पुनीत बरारा

त्रिलोचन सिंह

पारस शर्मा

आनंद नागर

दानिश

कपिल त्यागी

शाहनवाज खान

रोहिल युवा

अमित शाह

जितेंद्र त्यागी

श्याम सिंह

रवि कुमार

अभिषेक सिंह

सूचना : आप भी अपने जन्मदिन को विशेष बना सकते हैं। अपना फोटो नाम के साथ हमें नीचे लिखे ईमेल पर भेजें। हम उसे दैनिक करंट क्राइम में स्थान देंगे।
Email : currentcrimenews@gmail.com

प्रिय पाठकों,
आप भी हमें भेज सकते हैं अपनी लिखी हुई कविता, चुटकुले, विचार, आर्टिकल या शहर से जुड़ी हुई कोई भी समस्या। हम उसे प्रमुखता से प्रकाशित करेंगे।

करंट क्राइम

K-4, A-Block, Govindpuram Commercial Area, Near LG Showroom, Ghaziabad, Mob 09899655497
Email: currentcrimenews@gmail.com
Website: www.currentcrime.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक मनोज कुमार ने ए।जी।एस। पब्लिकेशन, एफ-23, सैक्टर-6, नोएडा-201301 (गौतमबुद्धनगर) उत्तर प्रदेश से छपवाकर कार्यालय 'करंट क्राइम' बी-2बी/295, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058 से प्रकाशित किया। R.N.I NO. DELHIN/2015/65364

सम्पादक : मनोज कुमार
समाचार संपादक दीपक भाटी
संरक्षक : राकेश यादव, विवेक भाटी

दैनिक करंट क्राइम

समाचार पत्र में किसी भी तरह के डिस्प्ले एवं वर्गीकृत विज्ञापन (खोया-पाया, संबंध-विच्छेद, कोर्ट नोटिस, जीडीए सूचना, नाम परिवर्तन) आदि के लिए निम्न फोन नंबर एवं पते पर संपर्क करें।

संपर्क : के-2, ए ब्लॉक, कॉमर्शियल मार्केट, गोविन्दपुरम, गाजियाबाद
मो. : 9818606318 (हरीश कुमार)
8630290003 (विष्णु गुप्ता)

ऑस्ट्रेलिया नहीं जाएंगे मोहम्मद शमी

विजय हजारे ट्रॉफी के लिए बंगाल टीम में हुए शामिल

नई दिल्ली । तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी बंगाल के लिए विजय हजारे ट्रॉफी में खेलते नजर आएंगे। उन्हें टीम में शामिल कर लिया गया है। ऐसे में उनका ऑस्ट्रेलिया जाना मुश्किल है। बता दें कि, भारतीय टीम फिलहाल ऑस्ट्रेलिया दौरे पर है। दोनों टीमों के बीच पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेली जा रही है। इस सीरीज का तीसरा मुकाबला ब्रिस्बेन में खेला जा रहा है जबकि चौथा और पांचवां मैच क्रमशः 26 दिसंबर और तीन जनवरी से खेला जाएगा।

21 दिसंबर से शुरू होगा टूर्नामेंट

विजय हजारे ट्रॉफी की शुरूआत 21 दिसंबर से होगी। बंगाल की टीम को ग्रुप ई में रखा गया है, जिसका पहले मैच में सामना दिल्ली से होगा। हैदराबाद में खेले जाने वाले इस मुकाबले में मोहम्मद शमी भी खेलते दिखेंगे। उन्हें बंगाल के स्क्वॉड में शामिल किया गया है। उनके अलावा मुकेश कुमार को भी टीम में जगह मिली है। सभी खिलाड़ी बुधवार को हैदराबाद के लिए कोलकाता से रवाना होंगे। शमी की किट ऑस्ट्रेलिया पहुंची हाल ही में पीटीआई की एक रिपोर्ट में बताया गया था कि शमी अंतिम दो मुकाबलों के लिए मेलबर्न में टीम से जुड़ सकते हैं। शमी से जुड़े एक करीबी सूत्र ने बताया कि एनसीए से फिटनेस सर्टिफिकेट जल्द ही मिल जाएगा। न्यूज एजेंसी पीटीआई से सूत्र ने कहा, शमी की किट पहले ही ऑस्ट्रेलिया भेजी जा चुकी है। वह सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी टी20 टूर्नामेंट का अभियान पूरा करने के बाद ऑस्ट्रेलिया के लिए रवाना होंगे।

कब होगी शमी की भारतीय टीम में वापसी?

शमी को आखिरी बार पिछले साल वनडे विश्व कप में भारत के लिए खेलते देखा गया था। उन्होंने इसी साल इस फरवरी में टखने की सर्जरी करवाई और नवंबर में रणजी ट्रॉफी के जरिए मैदान पर वापसी की। इसके बाद अनुभवी गेंदबाज को सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में बंगाल के लिए खेलते देखा गया। नौ मैचों में उन्होंने 7.85 की इकोनॉमी रेट से 11 विकेट लिए। हालांकि, अब तक उनकी भारतीय टीम में वापसी तय नहीं हुई है।

विजय हजारे ट्रॉफी के लिए बंगाल की टीमः सुदीप कुमार घरामी (कप्तान), मोहम्मद शमी, अनुस्तुप मजूमदार, अभिषेक पोरेल (विकेटकीपर), सुदीप चटर्जी, करण लाल, शाकिर हबीब गांधी (विकेटकीपर), सुमंत गुप्ता, सुभम चटर्जी, रणजोत सिंह खैरा, प्रदीप्ता प्रमाणिक, कौशिक मैती, विकास सिंह, मुकेश कुमार, सक्षम चौधरी, रोहित कुमार, मोहम्मद कैफ, सूरज सिंधु जयसवाल, सायन घोष, कनिष्क सेठ।

जब स्मिथ अच्छी बल्लेबाजी कर रहा होता है तो मैं किसी की नजर में नहीं आता : हेड

ब्रिस्बेन । ट्रैविस हेड और स्टीव स्मिथ ने गाबा में तीसरे टेस्ट मैच के दूसरे दिन रविवार को भारतीय गेंदबाजी आक्रमण का डटकर मुकाबला किया, चौथे विकेट के लिए 241 रनों की साझेदारी करके ऑस्ट्रेलिया को खेल में मजबूत स्थिति में पहुंचा दिया।

जसप्रीत बुमराह और नितीश कुमार रेड्डी ने शुरूआती सत्र में तीन विकेट लिए, जिसके बाद हेड और स्मिथ ने स्टंप्स तक ऑस्ट्रेलिया को 405/7 के कुल स्कोर तक पहुंचने में मदद की।

दोनों को निश्चित रूप से भारत के खिलाफ बल्लेबाजी करना पसंद है, देश के खिलाफ उनकी सबसे बड़ी साझेदारी 2023 विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल थी, जब उन्होंने 285 रनों की साझेदारी की थी, जिससे भारत को इस मंच पर लगातार दूसरी हार का सामना करना पड़ा था।

स्कोरबोर्ड में 152 रनों के योगदान के बाद, हेड ने बताया कि स्मिथ के साथ बल्लेबाजी करने से उन्हें

बल्लेबाजी करने की अधिक स्वतंत्रता मिलती है। मैंने हमेशा स्टीव के बारे में यही बात पसंद की है। मैंने महसूस किया है कि जब वह अपने क्षेत्र में होता है और अच्छी बल्लेबाजी करता है, तो मैं किसी की नजर में नहीं आता। मुझे लगा कि वह वास्तव में अच्छा खेल रहा है। मुझे नहीं लगा कि मैं दूसरे छोर पर अपने साथी को खो दूंगा, इसलिए इससे मुझे कुछ स्वतंत्रता भी मिलती है।

हेड ने मैच के बाद दिए इंटरव्यू में कहा, मैं बस समूह, कोचिंग स्टाफ, खिलाड़ियों का आनंद लेता हूं। मैं उनके काम का आनंद लेता हूं। पिछले कुछ वर्षों में मैंने जिस तरह से खेला है, उससे यह बात सामने आती है। पिछले कुछ हफ़्तों से मैं यह कर रहा हूं, यह अच्छा है।

स्मिथ का फॉर्म में लौटना ऑस्ट्रेलिया के लिए एक बड़ी खुशखबरी है, क्योंकि उन्होंने 25 पारियों के बाद अपना पहला शतक बनाया, जो उनके करियर का सबसे लंबा सूखा था, जबकि स्मिथ और हेड द्वारा चौथे विकेट के लिए 241 रनों की साझेदारी टेस्ट में भारत के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया के लिए किसी भी विकेट के लिए पांचवीं सबसे बड़ी साझेदारी है हेड, जो हाल के वर्षों में भारत के लिए कांटा रहे हैं।

डब्ल्यूपीएल नीलामी: डिएंड्रा डॉटिन, सिमरन शेख, जी कमलिनी को मिली मोटी कीमत

बेंगलुरु । वेस्टइंडीज की धमाकेदार ऑलराउंडर डिएंड्रा डॉटिन, मुंबई की बल्लेबाज सिमरन शेख और भारत की अंडर-19 विकेटकीपर-बल्लेबाज जी कमलिनी ने रविवार को यहां चल रही डब्ल्यूपीएल खिलाड़ी नीलामी में मोटी कीमत मिली है।

50 लाख रुपये के आरक्षित मूल्य वाली केवल तीन खिलाड़ियों में से एक डिएंड्रा को हासिल करने के लिए गुजरात जायंट्स और यूपी वॉरियर्स के बीच कड़ी टक्कर हुई, इससे पहले अदाणी स्पोर्ट्सलाइन के स्वामित्व वाली फ्रेंचाइजी ने उन्हें 1.7 करोड़ रुपये में अपने साथ जोड़ लिया।

लेकिन अब तक की नीलामी की बड़ी कहानी सिमरन जैसे अनकैप्ड खिलाड़ियों के लिए डील रही है, जिन्हें गुजरात जायंट्स ने दिल्ली कैपिटल्स को पछाड़कर 1.9 करोड़ रुपये में अपने साथ जोड़ा।

डब्ल्यूपीएल 2023 के लिए यूपी वारियर्स के साथ खेलने वाली सिमरन सीनियर महिला टी 20 ट्रॉफी जीतने वाली मुंबई की सदस्य थीं और चैलेंजर ट्रॉफी जीतने वाली इंडिया ई टीम की सदस्य थीं।

अंडर-19 एशिया कप में पाकिस्तान पर भारत की नौ विकेट की जीत में नाबाद 44 रन बनाने वाली दमदार खिलाड़ी कमलिनी को हासिल करने के लिए, मुंबई इंडियंस ने दिल्ली कैपिटल्स के साथ कड़ी बोली के बाद 1.6 करोड़ रुपये खर्च किए। मुंबई इंडियंस ने नीलामी से पहले ट्रायल के दौरान कमलिनी पर एक नजर डाली थी।

मदुरै की रहने वाली 16 वर्षीय कमलिनी चेन्नई में सुपर किंग्स अकादमी में प्रशिक्षण लेती हैं और आठ मैचों में 311 रन बनाकर सुर्खियों में आईं, क्योंकि तमिलनाडु ने अक्टूबर में अंडर-19 महिला टी20 ट्रॉफी जीती थी। वह वास्तिका भाटिया के बाद मुंबई की दूसरी विकेटकीपर-बल्लेबाज विकल्प होंगी।

भारत ने ट्रैविस हेड को अच्छी गेंदबाजी नहीं की : साइमन कैटिच

ब्रिस्बेन । ऑस्ट्रेलिया के पूर्व बल्लेबाज साइमन कैटिच ने गाबा में चल रहे तीसरे टेस्ट के दूसरे दिन ट्रैविस हेड के खिलाफ भारत की गेंदबाजी योजनाओं की कड़ी आलोचना की और इसे 'बेवकूफी भरी क्रिकेट' बताया।

कैटिच की टिप्पणी 60वें ओवर की पहली गेंद के बाद आई, जब मोहम्मद सिराज ने हेड को शॉर्ट बॉल डाली, जिन्होंने अपनी पीठ को मोड़ा और गेंद को बाउंड्री तक पहुंचा दिया। सिराज की इस रणनीति को देखकर कैटिच नाखुश हो गए।

चैनल 7 के लिए कमेंट्री करते हुए उन्होंने कहा, मोहम्मद सिराज की यह अविश्वसनीय बात है, क्योंकि पिछले ओवर में उन्होंने एक खिलाड़ी को सही जगह पर रखा था और उन्होंने दौड़कर गेंदबाजी की, जो वे बिना किसी फील्डर के करने की योजना बना रहे

थे। यह बेवकूफी है। बेवकूफी भरी क्रिकेट। उनके पास लेगसाइड, डीप पॉइंट पर दो खिलाड़ी हैं और ट्रैविस हेड के लिए इस योजना के लिए एक खिलाड़ी ठीक उसी जगह पर है और फिर उसके पास फील्डर नहीं है। अब वह फील्डर को वहीं रखने जा रहा है।"

विजिटर्स ने हेड के लिए डीप पॉइंट पर एक फील्डर रखा, जिसका मतलब था कि वह पहले से ही अपनी शर्तें तय कर रहा था और ऑफ-साइड से विकेट के स्क्वायर पर अपने अधिकांश रन बना रहा था। इसके अलावा, भारत ने हेड के खिलाफ बाउंसर की रणनीति का इस्तेमाल नहीं किया, जबकि क्रिकेट जगत जानता है कि बाएं हाथ के बल्लेबाज की क्रीज पर नए होने पर तेज लिफ्टर के खिलाफ कमजोरी है। पूर्व ऑस्ट्रेलिया कप्तान डेविड वार्नर ने फॉक्स स्पोर्ट्स पर यह बात कही, जब हेड ने चाय ब्रेक आने तक भारत के खिलाफ लगातार दो टेस्ट शतक जड़ दिए, मुझे समझ में नहीं आता कि भारत ने हेड को आउट करने की क्या योजना बनाई है। वे उसके लिए इसे बहुत आसान बना रहे हैं।"

भारत के पूर्व मुख्य कोच रवि शास्त्री ने कहा, भारत में वे उसे ट्रैविस हेड-सिरदर्द कहते हैं।

रोहित शर्मा की कप्तानी पर उठ रहे सवाल प्रशंसक और क्रिकेट विशेषज्ञों ने की आलोचना

ब्रिसबेन । भारतीय कप्तान रोहित शर्मा एक बार फिर सोशल मीडिया पर प्रशंसकों के निशाने पर आ गए हैं। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ ब्रिसबेन के गाबा में खेले जा रहे तीसरे टेस्ट में खराब कप्तानी के कारण रोहित पर निशाना साधा जा रहा है। भारत ने तीसरे टेस्ट के दूसरे दिन की शुरूआत अच्छी तरह की थी और पहले सत्र में तीन विकेट भी निकाल लिए थे। हालांकि, ट्रेविस हेड और स्टीव स्मिथ ने ऑस्ट्रेलिया की पारी को संभाला और दोनों ने शतक जड़ दिए।

ऑस्ट्रेलिया को 317 के स्कोर पर चौथा झटका लगा। स्मिथ हेड के साथ मिलकर ऑस्ट्रेलियाई पारी को 75 पर तीन से स्कोर 317 तक ले गए। दोनों के बीच चौथे विकेट के लिए 242 रन

की साझेदारी हुई। यह भारत के खिलाफ टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया के लिए चौथी सर्वश्रेष्ठ साझेदारी है। स्मिथ के आउट होने से पहले उन्होंने हेड के साथ मिलकर भारतीय गेंदबाजों को काफी परेशान किया। इस दौरान रोहित से एक कैच भी छूटा।

सोशल मीडिया पर प्रशंसकों की तीखी प्रतिक्रिया

हेड और स्मिथ के बीच साझेदारी होता देख भारतीय प्रशंसकों ने सोशल मीडिया पर रोहित की कप्तानी को लेकर सवाल खड़े किए और टॉस जीतकर गेंदबाजी करने के उनके फैसले की आलोचना की। इसके अलावा ये प्रशंसक रोहित की रणनीति से भी नाखुश दिखे। कुछ यूजर्स का कहना था कि रोहित ने स्मिथ और हेड के लिए फील्डिंग भी सही सेट नहीं की जिसका फायदा इन दोनों बल्लेबाजों ने उठाया।

क्रिकेट प्रशंसक ही नहीं, भारतीय टीम के पूर्व मुख्य कोच रवि शास्त्री भी रोहित की कप्तानी से खुश नहीं दिखे। उन्होंने कमेंट्री के दौरान हेड के खिलाफ अल्ट्रा डिफेंसिव फील्ड सेट करने के लिए रोहित की आलोचना की। शास्त्री ने इसे खराब फील्डिंग सेटअप करार दिया और उनका मानना था कि इससे बल्लेबाजों को गैप निकालने का मौका मिल रहा था। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व सलामी बल्लेबाज डेविड वॉर्नर भी शास्त्री की बातों से सहमत दिखे और उन्होंने कहा कि भारत को हेड के खिलाफ आक्रामक रवैया अपनाना होगा। गावस्कर-बांगड़ भी नाखुश संजय बांगड़ और सुनील गावस्कर भी रोहित की रणनीति से नाखुश रहे।

बेंगलुरू एफसी ने शानदार वापसी करके गोवा को ड्रा पर रोका

बेंगलुरू । बेंगलुरू एफसी ने शनिवार को अपने घरेलू मैदान श्री कांतीरवा स्टेडियम में दो गोल से पिछड़ने के बाद शानदार वापसी करते हुए इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) 2024-25 के डबल हेडर के शुरूआती मुकाबले में एफसी गोवा को 2-2 की बराबरी पर रोक दिया।

एफसी गोवा के लिए सेंटर-बैक संदेश झिंगन ने 7वें और डिफेंसिव मिडफील्डर साहिल टवोरा ने 66वें मिनट में गोल किए जबकि बेंगलुरू एफसी की तरफ से ऑस्ट्रेलियाई विंगर रयान विलियम्स ने 71वें और स्थानापन्न अर्जेंटीनी स्ट्राइकर जॉर्ज परेरा डियाज ने 83वें मिनट में गोल दागे। ऑस्ट्रेलियाई राइट-विंगर रयान विलियम्स को एक गोल करने और दाहिने फ्लैंक पर दमदार खेल दिखाने के लिए प्लेयर ऑफ द मैच घोषित किया गया।

आज ब्लूज द्वारा शानदार वापसी करके ड्रा खेलने पर स्पेनिश हेड कोच जेरार्ड जारागोजा निश्चित रूप से राहत महसूस कर रहे होंगे। बेंगलुरू एफसी 12 मैचों में सात जीत, तीन ड्रा और दो हार से 24 अंक लेकर तालिका में दूसरे स्थान से शीर्ष पर आ गई है। वहीं, गौर्स द्वारा दो गोलों की बढ़त गंवाकर ड्रा खेलने से स्पेनिश हेड कोच मैनोलो मार्क्वेज जरूर निराश होंगे। एफसी गोवा 11 मैचों में पांच जीत, चार ड्रा और दो हार से 19 अंक लेकर पांचवें से चौथे स्थान पर पहुंच गई है। यह आईएसएल में दोनों टीमों के बीच 17वां मैच था और आज पांचवां ड्रा खेला गया।

तीसरा टेस्ट : ट्रेविस हेड का शानदार शतक टी-ब्रेक तक ऑस्ट्रेलिया का स्कोर 234/3

ब्रिस्बेन । ऑस्ट्रेलिया और भारत के बीच गाबा में चल रहे तीसरे टेस्ट मैच की पहली पारी में ट्रेविस हेड ने एक और शतक लगाकर अपनी टीम को बढ़िया स्थिति में पहुंचा दिया है। ट्रेविस हेड ने एडिलेड में हुए पिंक बॉल टेस्ट मैच में भी 140 रनों की निर्णायक पारी खेली थी। कंगारुओं ने वह मैच 10 विकेट से जीता था।

1-1 से बराबर सीरीज का तीसरा टेस्ट ब्रिस्बेन के गाबा में हो रहा है जहां कप्तान रोहित शर्मा ने टॉस जीतकर पहले बैटिंग का फैसला किया है। इस टेस्ट के पहले दिन बारिश के चलते 15 ओवर का खेल भी नहीं हो पाया था और मेजबान टीम ने बगैर विकेट खोए 28 रन बनाए थे। दूसरे दिन ऑस्ट्रेलिया को उस्मान ख्वाजा के रूप में जल्द ही एक झटका लगा जब जसप्रीत बुमराह ने बाएं हाथ के बल्लेबाज को 21 रनों के निजी स्कोर पर चलता कर दिया।

इसके बाद बुमराह ने नाथन मैकस्वीनी को भी 9 रनों के निजी स्कोर

पर आउट कर महज 38 रनों के योग पर ऑस्ट्रेलिया को दूसरा झटका दिया। इसके बाद नीतीश रेड्डी ने मार्नस लाबुशेन को भी 12 रनों के निजी स्कोर पर आउट करके भारत की तीसरी सफलता दिलाई। अब तक ऑस्ट्रेलिया के तीन विकेट 75 रनों के स्कोर पर गिर चुके थे।

इसके बाद आउट ऑफ फॉर्म बल्लेबाज स्टीव स्मिथ और ट्रेविस हेड के बीच शानदार शतकीय साझेदारी देखने को मिली जो अब तेजी से आगे बढ़ रही है। इस साझेदारी में स्टीव स्मिथ को अपना बहुप्रतीक्षित अर्धशतक मिला तो हेड ने फॉर्म का एक बार फिर प्रचंड प्रदर्शन करते हुए शतक लगाया।

चायकाल तक स्टीव स्मिथ 149 गेंदों पर 6 चौके लगाते हुए 65 रन बनाकर खेल रहे थे। वहीं, ट्रेविस हेड ने 118 गेंदों पर 103 रन बना लिए हैं। हेड ने अपनी पारी में 13 चौके लगाए हैं। भारतीय गेंदबाजों की बात करें तो जसप्रीत बुमराह ने 51 रन देकर 2 विकेट लिए हैं। मोहम्मद सिराज और आकाशदीप को क्रमशः 58 और 43 रन खर्च करके अभी तक विकेट नहीं मिला है।

दूसरे दिन का खेल खत्म, हेड-स्मिथ के शतक की बदौलत ऑस्ट्रेलिया 405/7, बुमराह को 5 विकेट

नई दिल्ली । दूसरे दिन का खेल खत्म हो चुका है। ऑस्ट्रेलिया ने अपनी पहली पारी में सात विकेट गंवाकर 405 रन बना लिए हैं। मिचेल स्टार्क सात रन और एलेक्स कैरी 45 रन बनाकर नाबाद हैं। ट्रेविस हेड ने 152 रन और स्टीव स्मिथ ने 101 रन की पारी खेली। वहीं, भारत की ओर से जसप्रीत बुमराह ने पांच विकेट लिए।

रविवार को ऑस्ट्रेलिया ने बिना किसी विकेट के 28 रन से आगे खेलना शुरू किया और दूसरे दिन 377 रन बनाए और सात विकेट गंवाए। बुमराह ने पहले सत्र में उस्मान ख्वाजा (21) और नाथन मैकस्वीनी (9) को आउट कर दो झटके दिए। इसके बाद पहले सत्र में ही नीतीश रेड्डी ने मार्नस लाबुशेन (12) को पवेलियन भेजा। हालांकि, इसके बाद स्टीव स्मिथ और ट्रेविस हेड ने दूसरे सत्र में कोई विकेट नहीं गिरने दिया। दोनों ने चौथे विकेट के लिए 242 रन की साझेदारी निभाई।

हेड ने टेस्ट करियर का नौवां और स्मिथ ने 33वां शतक जड़ा। स्मिथ 190 गेंद पर 12 चौके की मदद से 101 रन और हेड 160 गेंद पर 18 चौके की मदद से 152 रन बनाकर आउट हुए। मिचेल मार्श पांच रन और कप्तान पैट कमिंस 20 रन बनाकर आउट हुए। कमिंस ने सातवें विकेट के लिए कैरी के साथ 58 रन की साझेदारी निभाई। बुमराह के अलावा सिराज और नीतीश को एक-एक विकेट मिला।

385 के स्कोर पर ऑस्ट्रेलिया को पांचवां झटका लगा। सिराज ने कमिंस को विकेटकीपर पंत के हाथों कैच कराया। वह 20 रन बना सके। कमिंस ने एलेक्स कैरी के साथ सातवें विकेट के लिए 66 गेंद में 58 रन की साझेदारी निभाई। फिलहाल कैरी का साथ देने मिचेल स्टार्क आए हैं।

ऑस्ट्रेलिया ने छह विकेट गंवाकर 370 से ज्यादा रन बना लिए हैं। फिलहाल एलेक्स कैरी और पैट कमिंस मैदान पर जमे हुए हैं। दोनों के बीच अर्धशतकीय साझेदारी हो चुकी है। कैरी आक्रामक बल्लेबाजी कर रहे हैं। 327 के स्कोर पर ऑस्ट्रेलिया को छठा झटका लगा। जसप्रीत बुमराह ने कहर बरपाते हुए ट्रेविस हेड को विकेटकीपर पंत के हाथों कैच कराया। वह 160 गेंद में 18 चौके की मदद से 152 रन बना सके।

रविंद्र यादव पर विजिलेंस का शिकंजा नोएडा प्राधिकरण के पूर्व ओएसडी की सपा नेताओं से है करीबी, 100 करोड़ से ज्यादा की संपत्ति के मालिक

नोएडा, करंट क्राइम। नोएडा प्राधिकरण के पूर्व ओएसडी रविंद्र सिंह यादव के नोएडा और इटावा स्थित आवास पर रविवार को विजिलेंस की टीम ने छापा मारा है। छापेमारी में 100 करोड़ से अधिक की संपत्ति का पता चला है। बताया जा रहा है कि ओएसडी रविंद्र यादव की सपा नेताओं से काफी करीबी रही है। यहीं नहीं, सपा सरकार में रविंद्र यादव की तूती बोलती थी। लेकिन योगी सरकार के आने के बाद इनके उल्टे दिन शुरू हो गए। फरवरी 2023 में इन्हें आय से अधिक संपत्ति मामले में सस्पेंड किया गया था। यह कार्रवाई योगी सरकार में औद्योगिक मंत्री नंदगोपाल नंदी ने की थी।

मेरठ विजिलेंस टीम खंगाल रही दस्तावेज

सूत्रों से पता चला है कि ओएसडी रविंद्र यादव सस्पेंड होने के बाद से सरकार की नजर में थे। रविवार को सरकार के आदेश के बाद मेरठ से निकली विजिलेंस की करीब चार से पांच टीमों ने ओएसडी रविंद्र यादव के नोएडा और इटावा स्थित आवास पर एक साथ छाप मारा। बताया जा रहा है कि ओएसडी को घटना की भनक तक नहीं लग पाई। एकाएक छापा पड़ने से रविंद्र यादव के परिवार में अफरा-तफरी का माहौल बना हुआ है। रविंद्र सिंह यादव के नोएडा सेक्टर-47 स्थित तीन मंजिला मकान की मौजूदा कीमत करीब 16 करोड़ रुपये है। उनके बेटे के नाम करीब 15 करोड़ रुपये का स्कूल है। इसके अलावा विजिलेंस जांच में काफी संपत्ति मिली है। बेटे के नाम पर इटावा में करोड़ों का स्कूल है। मकान से ही अरस्तू वर्ल्ड स्कूल मलाजनी, तहसील जसवंतनगर, इटावा के पंजीकरण के कागजात मिले। तलाशी में पता चला कि स्कूल की जमीन और भवन की मौजूदा कीमत करीब 15 करोड़ रुपये है। स्कूल सोसायटी का अध्यक्ष आरोपी का बेटा निखिल यादव है। स्कूल पूरी तरह वातानुकूलित है। इसमें स्मार्ट क्लास के जरिए पढ़ाई हो रही है। स्कूल में लगे सभी उपकरण और फर्नीचर की अनुमानित कीमत दो करोड़ रुपये है। 10 स्कूल बसों की अनुमानित कीमत 1.04 करोड़ रुपये है।

औद्योगिक मंत्री के इशारे पर छापा

चर्चा है कि औद्योगिक मंत्री नंदगोपाल नंदी के इशारे पर प्राधिकरण के पूर्व ओएसडी रविंद्र यादव पर यह कार्रवाई की जा रही है। मंत्री के इशारे में विजिलेंस और दूसरे डिपार्टमेंट धीरे-धीरे रविंद्र यादव की संपत्ति खंगाल रहे थे। सूत्रों से पता चला है कि लखनऊ के अलावा यूपी और दूसरे राज्यों के शहरों में भी रविंद्र यादव की संपत्ति का पता चला है। इसके अलावा उत्तराखंड में भी रविंद्र यादव द्वारा संपत्ति खरीदी गई है। इन सभी के दस्तावेज नोएडा या इटावा स्थित आवास पर होने की बात बताई जा रही है। फिलहाल विजिलेंस की टीम ने दस्तावेजों को खंगाल रही है। बताया जा रहा है कि रविंद्र सिंह यादव के घर से 60 लाख से अधिक के जेवरात बरामद हुए हैं। इसके अलावा उनके घर से 2.5 लाख की नकदी भी बरामद हुई है। उनके सभी बैंक खातों की भी तलाशी ली जा रही है। हालांकि, और क्या बरामद हुआ है, इसकी जानकारी अभी सामने नहीं आई है।

सीबीआई ने 2007 में की थी जांच

आरोपी रविंद्र यादव ने वर्ष 2007 में नोएडा प्राधिकरण में विशेष कार्यपालक अधिकारी के पद पर रहते हुए नियमों के विरुद्ध एक निजी ग्रुप हाउसिंग सोसायटी आईसीएमआर को 9712 वर्ग मीटर का सरकारी भूखंड आवंटित किया था। उस समय जांच सीबीआई ने की थी। फिलहाल विजिलेंस टीम जांच कर रही है। तलाशी में अब तक मिले अभिलेखों और साक्ष्यों को जांच में शामिल किया जा रहा है।

पुलिस और बदमाश के बीच मुठभेड़

शातिर स्नेचर को लगी गोली, हथियार-कारतूस और मोटरसाइकिल बरामद

गाजियाबाद, करंट क्राइम। गाजियाबाद के थाना शालीमार गार्डन पुलिस और बदमाश के बीच मुठभेड़ हो गई। मुठभेड़ के दौरान दोनों तरफ से फायरिंग में बदमाश की गोली लगी है। बदमाश शातिर स्नेचर है जिसके कब्जे से पुलिस ने तमंचा कारतूस और चोरी की मोटरसाइकिल बरामद की है। गाजियाबाद में एसीपी शालीमार गार्डन सलोनी अग्रवाल ने बताया की थाना शालीमार गार्डन पुलिस डीएलएफ स्कूल के सामने डीएवी कट वजीराबाद रोड पर चेकिंग कर रही थी। इसी दौरान एक बाइक पर एक संदिग्ध व्यक्ति आता दिखाई दिया। जिसे रोकने का प्रयास किया तो बिना रुके अपनी मोटरसाइकिल को पीछे मुड़कर तेजी से भागने लगा। शक होने पर पुलिस ने भी पीछा किया। बदमाश की मोटरसाइकिल ब्रेकर होने के चलते फिसल के गिर गई।

अपने को गिरता देख बदमाश के फायरिंग शुरू कर दी। जवाबी फायरिंग में बदमाश को गोली लगी है। पकड़ में आने के बाद बदमाश ने अपना नाम सलमान पुत्र इमरान डी 403 गली नंबर 1 जनता कॉलोनी वेलकम दिल्ली बताया। सलमान पर दिल्ली और गाजियाबाद में आर्म्स एक्ट लूट और चोरी के एक दर्जन मुकदमे कायम है। सलमान के कब्जे से एक तमंचा एक कारतूस और एक चोरी की मोटरसाइकिल बरामद हुई है।

कुछ है खोट तभी इस मौहल्ले में मांगते हैं फूल वाले हाथ के लिये वोट

इन दिनो भगवा सिटी के उस मौहल्लें में फुल चुनावी हल्ले हैं और आलम ये है कि दूसरे मौहल्लें के फ्लावर भी इधर आकर प्रचार कर रहे हैं। रविवार को सूर्यास्त के साथ ही अटन बटन से लेकर जिंदाबाद का शोर थम गया। किसकी हवा के सवाल पर मौहल्ले वालों ने ही मंदिर चौपाल पर हंस हंस कर यहां का माहौल बताया। कहा कि देखो जी औरों का तो पता नहीं पर हमारा मौहल्ला ऐसा है जहां फूल वाले तो हाथ वालों के लिये वोट मांगते हैं और फूल वाले ही फूल वालों के हारने की कामना करते हैं। उन्होने बताया कि जब सीट ही रिजर्व हो गई तो वो भी डिजर्व नही करते थें। मगर मौहल्ले वाला गप्पू बता देगा कि पप्पू वाली पार्टी के पक्ष में बटन दबाने के लिये उसे किस फूल वाले ने कहा था। पता चला है कि इस बार भी सीन कुछ ऐसा है कि फूल वालों ने ही फूल वालों के लिये फॉयर उगल रखी है। गोयल से लेकर बसंल तक सब हाथ ही हाथ कर रहे हैं। ऐसा भगवा मौहल्ला नही देखा होगा जहां हाथ वाले भले ही हाथ वाले के लिये वोट ना मांगें पर फूल वाले पूरी शिददत के साथ हाथ वालों के लिये भूमिगत होकर वोट मांग रहे हैं।

एकजुटता स्टोरी में टविस्ट क्यों अब पॉवर होना चाहती है शिफ्ट

पहले लोटे में साल्ट डाला गया और उनमें ढूंढ ढूंढ कर फाल्ट तलाशा गया। जिन्हे वो मान रहे थे कि उनकी बिसात ही क्या है उन्होने ही उनकी बिसात पर उन्हे ही घेर लिया। सकंटमोचक को पता ही नही चला कि राह में किसने कंटक बिछा दिये और सकंट आ भी गया। एकता का काफिला ज्यादा दिन चल नही पाया और सुना है कि अब एकता हांफने लगी है। बताने वाले बता रहे हैं कि एकजुटता की कहानी में मोड़ आ गया है और अब पॉवर अपने नये सेंटर से दूसरे सेंटर की और शिफ्ट होना चाहती है। जब से उन्होने डोंट इंटरफेयर वाली बात कही है तब से बाकियों को ये बात कतई फेयर नही लगी है। अब कुछ तो आग है जो ये धुंआ उठ रहा है, सुना है कि मन ही मन में कुछ घुट रहा है।

अजी भाईसाहब उनके हमारा क्या मतलब ना बिरादरी ना शहर

ये शहर वाकई बड़ा बेमुरव्वत है और वक्त के साथ बदल जाता है। अभी तो दस महीने भी नही हुये है और शहर ने दस साल को ताक पर रखना शुरू कर दिया है। जो उनसे ही भाजपा उनसे ही सियासत उनसे ही दिन उनसे ही रात की बात कहते थे वो अब कुछ और ही कहते हैं। बहनजी और साहब की माला फेरने वाले ने दिन फिरते ही नजरे फेर ली। एक मौके पर जिक्र हुया तो उनकी जुबान से तपाक से निकला कि अजी भाईसाहब पता नही क्यों हमारा नाम उनके साथ कनेक्ट किया जा रहा है। ना वो हमारी बिरादरी के हैं और ना हमारे शहर के। रही बात सम्मान की तो वो तो परिपाटी है हमारी पार्टी की। सम्मान हमारे यहां पद का होता है और ना यकीन हो तो कई पूर्व इसी शहर में ऐसे हैं कभी जिनके साथ मेला चला करता था आज वो इसी शहर में अकेले मिल जायेगें।

अखिल भारतवर्षीय ब्राह्मण महासभा

गाजियाबाद की जिला एवं महानगर कार्यकारिणी की बैठक संपन्न

गाजियाबाद, करंट क्राइम। अखिल भारतवर्षीय ब्राह्मण महासभा गाजियाबाद की जिला एवं महानगर कार्यकारिणी की बैठक, महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जेके गॉड के आवास पर रविवार को हुई जिसमें कार्यकारिणी ने 25 दिसंबर को महामना पंडित मदन मोहन मालवीय की जयंती मनाने के लिए अपने प्रस्ताव और सुझाव दिए। सभा में तय किया गया कि 25 दिसंबर को जे के जी स्कूल नंदग्राम के सभागार में पंडित मदन मोहन मालवीय की जयंती मनाई जाएगी। वरिष्ठ शिक्षा विद रहे लोगों को सम्मानित किया जाएगा और पंडित मदन मोहन मालवीय के द्वारा किए गए महान कार्यों पर प्रकाश डाला जाएगा। इसके उपरांत जिला एवं महानगर कार्यकारिणी की बैठक में एक प्रस्ताव जिला महामंत्री आदेश शर्मा के द्वारा पेश किया गया कि हमारे वर्तमान जिला अध्यक्ष और महानगर अध्यक्ष के कार्यकाल को आगे बढ़ाने के लिए प्रस्ताव पेश किया जिसे कार्यकारिणी ने सर्वसम्मति से पास किया, जिसकी अध्यक्षता वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पंडित जे के गॉड के द्वारा की गई। बैठक में जिला अध्यक्ष जय नंद शर्मा, महानगर अध्यक्ष सुभाष शर्मा, जिला महामंत्री पंडित आदेश शर्मा, जिला महामंत्री पंडित विजय भारद्वाज, महानगर महामंत्री संदीप शर्मा, हरिओम शर्मा, पंडित मदन शर्मा, पंडित आशुतोष शर्मा, पंडित नितिन शर्मा, राजू पंडित रईसपुर, मोनू शर्मा, वासुनधरा, अमित गौड़, वैशाली, नरेश शर्मा साहित अन्य कार्यकारिणी सदस्य मौजूद रहे।

साढ़ू से बात करने पर पत्नी की गला रेत कर हत्या, आरोपी पति गिरफ्तार

हापुड़, करंट क्राइम। हापुड़ के बाबूगढ़ कोतवाली इलाके में साढ़ू से बात करने पर एक पति ने अपनी पत्नी की धारदार हथियार मारकर हत्या कर दी। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। फिलहाल पुलिस पकड़े गए आरोपी से पूछताछ में जुटी है। आरोपी पिता के पकड़े जाने पर उसके बच्चों ने पुलिस से दोषी पिता को फांसी देने की गुहार लगाई।

दरअसल, शनिवार सुबह को ग्राम मुक्तेश्वर निवासी रमेश और उसकी पत्नी संगीता के बीच किसी बात को लेकर विवाद हो गया था। विवाद इतना बढ़ गया कि रमेश ने पत्नी संगीता के गर्दन पर बलकटी से वार कर दिया। जिससे मौके पर ही उसकी मौत हो गई। हत्याकांड के बाद आरोपी पति फरार हो गया। दिनदहाड़े हुए इस हत्याकांड से गांव में अफरा-तफरी मच गई। हत्याकांड की जानकारी मिलने पर काफी संख्या में ग्रामीण मौके पर पहुंच गए। पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी थी।

साढ़ू से बात करने पर की थी पत्नी की हत्या

रविवार को पुलिस ने पूरे मामले का खुलासा करते हुए आरोपी पति रमेश को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस पूछताछ में आरोपी ने बताया कि उसकी पत्नी अक्सर उसके सरधना के एक गांव में रहने वाले साढ़ू से बात करती थी। जिसका उसने कई बार विरोध किया था। लेकिन उसने बहनोई का रिश्ता होने की बात कहकर बातचीत का सिलसिला जारी रखा। थाना प्रभारी विजय गुप्ता ने बताया कि 4 दिन पूर्व भी वह बिना बताए अपनी बहन के यहां गई थी। इसी बात को लेकर दोनों के बीच शनिवार को कहासुनी हुई थी। जिसके बाद उसकी हत्या कर दी। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

बजरंग दल ने निकाली शौर्य यात्रा

साहिबाबाद (करंट क्राइम)। विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल द्वारा रविवार को वैशाली महानगर के वैशाली प्रखंड में शौर्य यात्रा निकाली गई। जिसमें प्रांत मंत्री राजकुमार डूंगर का उद्बोधन हुआ। उन्होंने बताया कि बजरंग दल ऐसे ही देश का दल नहीं है यह हिंदू समाज के लिए अनवरत त्याग और बलिदान के साथ कार्य कर रहा है। चाहे वह किसी भी प्रकार का जिहाद हो उससे लड़ना हो या, अपने समाज के लिए कोई भी विरोध में हो या कोई विधर्मी हो उसे टक्कर लेनी हो बजरंग दल हमेशा दिन-रात तैयार खड़ा रहता है। उन्होंने बताया कि यह जो शौर्य यात्रा है वह बाबरी मस्जिद विध्वंस जो की गीता जयंती की तिथि पर हुई थी। उसे उपलक्ष में यह पूरे भारत देश में निकाली जाती है। इस अवसर पर वैशाली महानगर अध्यक्ष डॉ ब्रह्म कुमार गुप्ता, महानगर की पूरी समिति एवं वहां के 14 प्रखंडों से बजरंग दल के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

मुठभेड़ में 25-25 हजार के 2 इनामी बदमाश गिरफ्तार

करनाल हाईवे पर टेंपो में गोमांस लेकर जा रहे थे

मेरठ, करंट क्राइम। मेरठ में सरधना और सरूरपुर पुलिस ने जॉइंट ऑपरेशन के दौरान 25-25 हजार रुपये के दो इनामी बदमाशों को गिरफ्तार कर लिया। मुठभेड़ में दोनों के पैरों में गोली लगी है। दोनों आरोपी टेंपो में गोमांस लेकर जा रहे थे।

एसपी देहात राकेश कुमार मिश्रा ने बताया कि शनिवार आधी रात को सरधना एवं सरुरपुर थाना प्रभारी पुलिस के करनाल हाईवे पर भूनी फ्लाईओवर के पास चेकिंग कर रहे थे। सामने से आए एक टेंपो को रोकने को प्रयास किया तो टेंपो सवार युवकों ने पुलिस पर फायरिंग कर दी। पुलिस की जवाबी फायरिंग में दोनों युवकों के पैरों में गोली लग गई।

आरोपियों ने अपना नाम सुहैल पुत्र सलीम निवासी बड़ी कुरैशियान मस्जिद नाले के पास जली कोठी देहली गेट और शादाब पुत्र मौ. इशाक निवासी सेक्टर 11 ढवाईनगर शास्त्रीनगर थाना नौचंदी बताए। दोनों को उपचार के लिए सीएचसी सरुरपुर भिजवाया गया।

एसपी राकेश कुमार मिश्रा ने बताया कि आरोपियों के पास से दो तमंचे, दो कारतूस, टेंपो में रखे तीन प्लास्टिक के बोरों में करीब 75 किलो गौमांस बरामद हुआ। दोनों पर 25-25 हजार रुपये का पुरस्कार घोषित था। दोनों की निशानदेही पर मांस खरीदने वाले आरोपी परवेज पुत्र फारूख निवासी नीचा सद्दीक नगर इस्लामाबाद थाना लिसाड़ी गेट को भी गिरफ्तार कर लिया गया है।

ऑपरेशन पियक्कड़ अभियान के तहत कार्रवाई: खुले में शराब पीते 97 लोगों को पकड़ा, राहगीरों से करते हैं बदसलूकी

हापुड़, करंट क्राइम। हापुड़ में पुलिस ने सार्वजनिक स्थानों को महखाने बनाने वालों के खिलाफ जिलेभर में ऑपरेशन पियक्कड़ अभियान चलाया। जिसके तहत पुलिस ने ऐसे लोगों को गिरफ्तार किया जो सार्वजनिक स्थानों पर शराब पी रहे थे। पुलिस ने 97 पियक्कड़ पकड़कर उनके खिलाफ वैधानिक कार्यवाही की।

सार्वजनिक स्थानों को बना देते हैं 'खुला बार'

बता दें कि शाम ढलते ही शराबियों का सार्वजनिक स्थान दारू का अड्डा बन जाता है। ऐसे में कई बार तो शराबी आते जाते लोगों से अभद्रता कर देते है। सार्वजनिक स्थानों पर कार, बाइक, चौराहों पर खुला बार बनाकर पियक्कड़ शराब पीते है। जिसको लेकर जिले के एसपी कुंवर ज्ञानंजय सिंह ने अभियान चलाने के आदेश दिए। जिसके बाद नगर कोतवाली पुलिस, बाबूगढ़ पुलिस, धौलाना पुलिस, कपूरपुर और हाफिजपुर पुलिस ने अभियान चलाया।

एसपी ने दिया सख्त निर्देश

एसपी केजी सिंह ने बताया कि कुछ लोग सार्वजनिक स्थानों पर शराब पीकर लोगों से अभद्रता करते है। शराब पीकर उनके द्वारा हुड़दंग काटा जाता है। जिसको लेकर पुलिस ने अभियान चलाया और कार्रवाई करते हुए 97 लोगों को हिरासत में लेकर संबंधित धाराओं में कार्रवाई की। उनका कहना है कि यह अभियान आगे भी जारी रहेगा।

महाराणा भवन में राजपूत समाज बैठक का आयोजन

साहिबाबाद (करंट क्राइम)। गाजियाबाद के नेहरू नगर स्थित महाराणा भवन में राजपूत समाज की बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में गाजियाबाद के समस्त राजपूतों ने हिस्सा लिया और राजपूत नेताओं के पद को लेकर चर्चा हुई।

राजपूत समाज ने अपनी बैठक के दौरान बात रखी कि उनके समाज का कोई नेता बीजेपी संगठन में गाजियाबाद में नहीं है। बीजेपी ने उनके साथ भेदभाव किया और उनके समाज के नेता को न तो विधानसभा और लोक सभा चुनाव मे टिकट नहीं दिया। राजपूत समाज बीजेपी संगठन में महानगर अध्यक्ष अपने समाज का चाहता है। बैठक में राजपूत समाज ने कहा कि बीजेपी ने उनके समाज को गाजियाबाद से नकार दिया है। अब बीजेपी को उनके समाज के नेता को महानगर अध्यक्ष बनाना चाहिए, जिससे समाज में पार्टी के लिए विश्वास बढ़ सके। इस अवसर पर पूर्व पार्षद सरदार सिंह भाटी, चमन चौहान, मंडल अध्यक्ष दीपक राघव, कालीचरण पहलवान, भानु सिसोदिया आदि लोग मौजूद रहे।

क्या बदलेगें एक कार्यालय के समीकरण

पुलिस कमिश्नरेट सिस्टम गाजियाबाद में इन दिनों चर्चा सुनाई दे रही है कि क्या एक कार्यालय के समीकरण बदलेंगे या मामला ऐसे ही साइड लाइन वाला चलता रहेगा। बीते दिनों पुलिस कमिश्नरेट गाजियाबाद सिस्टम से एक शीर्ष आईपीएस अधिकारी का तबादला हुआ था। उनके तबादले के बाद माना जा रहा था कि जो महत्वपूर्ण काम की जिम्मेदारी वह संभालते थे वह उन्हीं के समकक्ष अधिकारी को दी जाएगी, लेकिन कमिश्नरेट के आदेश और वर्किंग स्टाइल थोड़ा अलग है और इसका नजारा भी देखने को मिला है। यहां शीर्ष अधिकारी के जाने के बाद उनके काम को देखने की जिम्मेदारी सिटी वाले साहब को सौंपी गई है। तो वही जाने वाले अधिकारी की रैंक वाले अधिकारी अभी पूर्व की तरह बने हुए हैं। अब क्या मामला है जो एक शीर्ष अधिकारी के जाने के बाद दूसरे शीर्ष अधिकारी को जिम्मेदारी नहीं सौंपी गई है। उधर कमिश्नरेट वाले सूत्र बताते हैं कि बीते दिनों अधिकारी लीव पर गए थे और लीव से आने के बाद भी मामला राइट नहीं बन पाया है। इसी के साथ पुलिस कमिश्नरेट गाजियाबाद वाले सूत्र बता रहे हैं कि जो सीट खाली हुई थी, उसे भरने के लिए जल्द ही पुलिस कमिश्नरेट गाजियाबाद में एक आईपीएस अधिकारी आएंगे। वह 2011 बैच के रहेंगे, यही से उनका डीआईजी वाला प्रमोशन होगा और वह कमिश्नरेट में हिस्सा बने रहेंगे। देखना होगा महाराज जी के लखनऊ वापसी होने के बाद कब आईपीएस वाली लिस्ट जारी की जाती है और फिर कमिश्नरेट में कब तक उनको भेजा जाता है। यहां नगर निगम का उप चुनाव होना है, उसको लेकर भी सिटी वाले साहब फोकस में दिखाई दें रहे हैं। रविवार को उनके निर्देशन में ही चुनावी मीटिंग लाइन में हुई है। तो वही कमिश्नरेट वाले सूत्र बता रहे हैं कि जिस कार्यालय के समीकरण बदलने की बात की जा रही है, वहां पर पूर्व में भी ऐसा हो चुका है। एक शीर्ष अधिकारी गाजियाबाद आई थी और फिर छुट्टी पर गई तो लौटकर ही नहीं आई थीं। देखना होगा कि पिछले साल जो मामला हुआ था, वह इस बार कितना अलग और नया रहता है। वैसे पुलिस कमिश्नरेट गाजियाबाद वाले सूत्र बता रहे हैं कि उस कार्यालय को लेकर कई तरीके की चर्चाएं कमिश्नरेट सिस्टम से पहले भी रही हैं। तो वर्तमान में भी इस कार्यालय को लेकर चर्चाएं सुनाई दी हैं। कुल मिलाकर पुलिस कमिश्नरेट वाले सूत्र बता रहे हैं कि इसी सप्ताह पुलिस कमिश्नरेट गाजियाबाद में एक शीर्ष आईपीएस अधिकारी की एंट्री होने की पूरी संभावना है। देखना होगा नए आईपीएस के आने के बाद आईपीएस अधिकारियों के बीच का तालमेल किस करवट बैठता है। कौन नंबर दो और कौन तीसरे नंबर पर रहेगा।

कांग्रेस के पूर्व महानगर अध्यक्ष नरेंद्र भारद्वाज का जन्मदिन धूमधाम के साथ मनाया

गाजियाबाद, करंट क्राइम। रविवार को कांग्रेस के पूर्व महानगर अध्यक्ष एवं वरिष्ठ कांग्रेसी नेता व समाजसेवी पंडित नरेंद्र भारद्वाज का जन्मदिन वसुंधरा सेक्टर 16 में स्थित हनुमान मंदिर में बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया गया। गाजियाबाद से पूर्व लोकसभा प्रत्याशी डोली शर्मा, लक्ष्मी भारद्वाज, पुष्पा शर्मा, नितिन यादव, नरेश सिंघानिया, सुमित भारद्वाज, अमित भारद्वाज, रिया भारद्वाज, महिला कांग्रेस की जिलाध्यक्ष सोनल नागर, सविता त्रिपाठी, महिपाल शर्मा ,वीरेंद्र शर्मा, एमबी कौशिक सिराजुद्दीन, अनिल, संध्या शर्मा , गिरीश शर्मा, मनोज भारद्वाज, महेश भारद्वाज, सुरेंद्र भारद्वाज, इंद्रपाल प्रधान, अमित किशोर, अश्वनी कौशिक, जय मास्टर, मोहन सिंह राणा, राहुल कौशिक, शैलेंद्र शर्मा, विनोद एमजी, सोनू,कल्याणी वासुदेव शर्मा, विकास यादव , आदि के उत्तराखंड, झारखंड, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, के अलेवा राजनेताओं ने भी नरेंद्र भारद्वाज जी को जन्मदिन की बधाई व शुभकामनाएं और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

बृज विहार में श्रीमद्भागवत कथा के शुभारंभ पर निकली कलश यात्रा

साहिबाबाद (करंट क्राइम)। बृज विहार के श्री सत्यनारायण मंदिर ट्रस्ट प्रांगण में रविवार को भव्य कलश शोभा यात्रा के साथ श्रीमद्भागवत कथा का शुभारंभ हुआ। यह धार्मिक आयोजन क्षेत्र के श्रद्धालुओं और सामाजिक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में अत्यंत हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। कलश शोभा यात्रा में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लिया। शोभायात्रा का मार्ग मंदिर प्रांगण से प्रारंभ होकर क्षेत्र के विभिन्न प्रमुख स्थलों से गुजरते हुए पुनः मंदिर प्रांगण में समाप्त हुआ। यात्रा में श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और भक्ति भाव से माहौल को सराबोर कर दिया। समिति के अध्यक्ष एमपी शर्मा, वीरेंद्र कुमार सिंह, लल्लन सिंह, शशिकांत तिवारी, रणविजय सिंह, विकास राजपूत, अशोक पांडे, इन्द्रपाल भदौरिया, नागेंद्र पाण्डेय , वीरेंद्र यादव, ध्रुव कुमार आदि अन्य सदस्यों ने शोभा यात्रा की व्यवस्था की। सभी श्रद्धालुओं से अनुरोध किया गया कि आभूषण पहन के ना आएं। अशोक पाण्डेय ने बताया कि पिछले वर्ष की भांति इस बार भी महिलाओं ने श्रद्धापूर्वक तुलसी कलश को सिर पर रखकर भव्य यात्रा को पूर्ण किया। इस दृश्य ने यात्रा में भक्ति और आस्था का अद्भुत माहौल उत्पन्न किया। भागवत कथा के प्रथम दिवस पर कथावाचक पंडित श्रीकांत पांडेय ने कथा के महात्म्य का विस्तृत वर्णन किया। उन्होंने श्रद्धालुओं को भागवत कथा के महत्व और इसके जीवन में सकारात्मक प्रभावों से अवगत कराया। पंडित श्रीकांत पांडेय ने बताया कि भागवत कथा सुनने से कई फायदे होते हैं, जैसे कि मृत्यु को जानने से मृत्यु का डर मन से निकल जाता है। कहा कि परीक्षित ने भागवत कथा सुनकर अभय को प्राप्त किया था, उसी तरह भागवत कथा सुनने से जीव को अभय मिलता है। इस अवसर पर पार्षद विनय चौधरी, पूर्व पार्षद पूनम त्यागी, भाजपा नेता योगेश त्रिपाठी, राकेश कुंवर, अजय त्यागी, विपुल, नितिन , विक्की, विज, हरेंद्र नगर, अर्जुन तोमर, महानगर भाजपा कार्यकारिणी सदस्य बॉबी त्यागी, भूपेश शर्मा, संजय भारद्वाज, एस एन ठाकुर, सुरेंद्र तिवारी, अमित, दानी सिंह, जेके आदि लोग मौजूद रहे।

वेस्ट बैंक पर सुरक्षा बलों के साथ झड़प में मारा गया फिलिस्तीनी आतंकवादी

रामल्लाह। उत्तरी पश्चिमी तट के जेनिन शरणार्थी शिविर में फिलिस्तीनी सुरक्षा बलों और सशस्त्र फिलिस्तीनी गुटों के बीच झड़प हुई। एक चिकित्सा सूत्र ने बताया कि इस झड़प में एक आतंकवादी मारा गया और कई अन्य घायल हो गए।

नाम न छापने की शर्त पर सूत्र ने बताया है,फिलिस्तीनी सुरक्षा बलों ने शनिवार को शरणार्थी शिविर की घेराबंदी कर ली, जिसके बाद इस्लामिक जिहाद आंदोलन के ₹जेनिन ब्रिगेड और अन्य फिलिस्तीनी गुटों से जुड़े आतंकवादियों ने 5 दिसंबर को फिलिस्तीनी प्राधिकरण के दो वाहनों को जब्त कर लिया।

शिविर में आतंकवादियों और फिलिस्तीनी सुरक्षा बलों के बीच संघर्ष के दौरान, सुरक्षा बलों की गोलियों से एक आतंकवादी मारा गया, जबकि कई अन्य घायल हो गए। कहा जा रहा है कि फिलिस्तीनी सुरक्षा बलों के पांच सदस्य भी घायल हुए हैं।

फिलिस्तीनी सुरक्षा बलों के प्रवक्ता अनवर रजब ने एक बयान में पुष्टि की है कि बलों ने सार्वजनिक सुरक्षा बनाए रखने के लिए जेनिन में अभियान शुरू कर दिया है।

उन्होंने कहा कि इस अभियान के तहत जेनिन शिविर को बचाना है। क्योंकि यहां पर जिस तरह से हिंसा हुई है उससे नागरिकों का दैनिक जीवन बाधित हुआ है और उन्हें स्वतंत्र और सुरक्षित रूप से सार्वजनिक सेवाएं प्राप्त करने के उनके अधिकार से वंचित किया है।

फिलिस्तीनी उग्रवादी समूह हमास, जो एक वर्ष से अधिक समय से गाजा में इजरायली सेना से लड़ रहा है, उसने जेनिन ऑपरेशन के लिए फिलिस्तीनी प्राधिकरण (पीए) की निंदा की और उसके सहयोगी समूह इस्लामिक जिहाद ने एक दिन के विरोध प्रदर्शन का आह्वान किया। चिकित्सा सूत्र ने बताया कि शनिवार को जेनिन के इब्न सिना अस्पताल में एक शव लाया गया था।

ईरानी गायिका को हिजाब न पहनने के लिए पुलिस ने जेल में डाला, यूट्यूब पर साझा किया था अपने गाने का वीडियो

तेहरान। ईरान में एक 27 साल की गायिका को वर्चुअल गाना गाने के बाद गिरफ्तार कर लिया गया है। दरअसल गाने के दौरान गायिका ने हिजाब नहीं पहना था और उसने ये वीडियो सोशल मीडिया पर पोस्ट कर दिया था। गौरतलब है कि इस गायिका के गाने को अब तक 15 लाख से ज्यादा लोग देख-सुन चुके हैं।

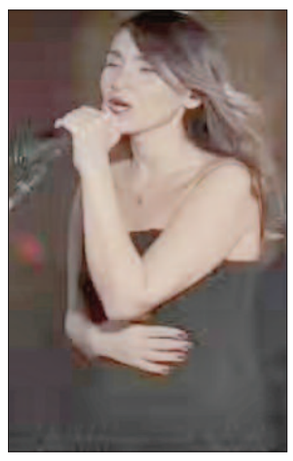

स्लीवलेस ड्रेस में परफॉर्म करती नजर आ रही हैं परस्तु

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, गायिका की पहचान परस्तु अहमदी के रूप में हुई है। परस्तु को शनिवार को ईरान के सारी शहर से गिरफ्तार कर लिया गया। सारी ईरान के मजानदारान प्रांत का एक शहर है, जो राजधानी तेहरान से करीब 280 किलोमीटर दूर है। परस्तु द्वारा अपने गाने की वीडियो यूट्यूब पर साझा करने के बाद गुरुवार को उसके खिलाफ मामला दर्ज किया गया था। वीडियो में परस्तु एक स्लीवलेस काली ड्रेस में परफॉर्म करती नजर आ रही हैं। इस वीडियो को लाखों लोग देख चुके हैं। दो संगीतकार भी गिरफ्तार मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, परस्तु के पीछे खड़े चार संगीतकारों के खिलाफ भी मामला दर्ज किया गया है। इनमें से दो को राजधानी तेहरान से गिरफ्तार भी कर लिया गया है। उल्लेखनीय है कि ईरान में महिलाओं का हिजाब पहनना अनिवार्य है और इस नियम का पालन न करने वाली महिलाओं के खिलाफ सख्त कार्रवाई का ईरान का इतिहास रहा है। साल 2022 में ईरान में हिजाब के खिलाफ बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन भी हुए थे। ये विरोध प्रदर्शन 22 वर्षीय महसा अमीनी की मौत के बाद शुरू हुए, जिसे ईरान की पुलिस ने हिजाब न पहनने के चलते प्रताड़ित किया, जिससे महसा की णौत हो गई थी।

कुछ माह पहले भी ईरान से ऐसी रिपोर्ट्स आईं थी, जिसमें एक छात्रा की हिजाब न पहनने के चलते ईरान की नैतिक पुलिस ने छात्रा की पिटाई की थी। इस पिटाई के चलते छात्रा कोमा में गई और कुछ दिन बाद उसकी मौत हो गई थी।

गाजा में शरणार्थी शिविर पर इस्राइली हमला 22 लोगों की मौत

यरुशलम। गाजा में शनिवार को इस्राइली हमले में 22 लोगों की मौत हो गई। हमला स्कूल में चल रहे शरणार्थी शिविर पर किया गया, जहां एक फलस्तीनी फोटो पत्रकार समेत 18 लोगों की मौत हो गई। जबकि गाजा सिटी में हुए एक अन्य हमले में 4 लोग मारे गए।

वहीं, दूसरी तरफ इस्राइली डिफेंस फोर्स (आईडीएफ) ने बताया कि मारे गए लोग शरणार्थियों की आड़ में छिपे हुए हथियारबंद लड़ाके थे।

बता दें कि सात अक्टूबर 2023 से जारी इस्राइली हमलों में अब तक लगभग 44 हजार फलस्तीनी मारे जा चुके हैं। इस बीच संयुक्त राष्ट्र राहत एजेंसी ने राहत सामग्री भेजनी भी बंद कर दी है, जिसके चलते गाजा में फलस्तीनियों के सामने भुखमरी संकट खड़ा हो गया है।

फलस्तीनी स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक 10 लोग दीर अल-बलाह के निकाय भवन में मारे गए, वहां पर सभी लोग राहत सामग्री लेने के लिए पहुंचे थे। हमले के बाद लगभग एक दर्जन घायलों को लोग नजदीकी अस्पताल ले गए

अंतरराष्ट्रीय सॉवरेन बांड एक्सचेंज ऑफर का समापन ऋण पुनर्गठन, नई प्रतिभूति हासिल करने में मिलेगी मदद

कोलंबो। श्रीलंका ने अपने अंतर्राष्ट्रीय सॉवरेन बॉन्ड एक्सचेंज ऑफर के सफल समापन की घोषणा की है, जिसमें 98 प्रतिशत बॉन्डधारकों ने भाग लिया। यह कदम देश को अपने ऋण का पुनर्गठन करने और नई बॉन्ड प्राप्त करने में मदद करेगा।

श्रीलंका ने यह घोषणा शुक्रवार को की गई, जो 14.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर के ऋण पुनर्गठन समझौते के कुछ दिनों बाद आई है, जिसे पिछले शासन में तय किया गया था। इस समझौते के तहत मौजूदा बॉन्ड के बदले नए बॉन्ड जारी किए जाएंगे और यह कदम आईएमएफ द्वारा कर्ज स्थिरता बनाए रखने के लिए जरूरी था। श्रीलंका के राष्ट्रपति और वित्त मंत्री स्वीकारा विश्वासमत श्रीलंका के राष्ट्रपति और वित्त मंत्री अनुरा कुमारा दिसानायके ने इस उच्च भागीदारी को एक विश्वासमत के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि इस विनिमय में बाजार प्रतिभागियों की बड़ी भागीदारी यह दिखाती है कि सरकार की योजना में विश्वास है।श्रीलंका के राष्ट्रपति ने विश्वासमत के रूप में सराहा श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिसानायके ने शुक्रवार को अंतर्राष्ट्रीय और स्थानीय हितधारकों से उच्च भागीदारी को एक विश्वासमत के रूप में सराहा। उन्होंने कहा हम अपने अंतर्राष्ट्रीय और स्थानीय बॉन्डधारकों से इस विश्वास को देखकर बहुत प्रसन्न हैं। पिछले कुछ साल श्रीलंकाई जनता के लिए बहुत चुनौतीपूर्ण रहे हैं, लेकिन हमारे सामूहिक प्रयास अब फल दे रहे हैं।

उन्होंने आगे कहा इस ऋण विनिमय का कार्यान्वयन, जो दो वर्षों की गहन वार्ता का परिणाम है। श्रीलंका को पर्याप्त ऋण राहत प्रदान करेगा। इससे हमारे विकास और सामाजिक योजनाओं को वित्तपोषित करने के लिए अल्प और मध्यम अवधि में संसाधन मिलेंगे और हमारे सार्वजनिक वित्त की दीर्घकालिक स्थिरता बहाल होगी। उन्होंने कहा कि आज हम अपने इतिहास का एक नया अध्याय शुरू कर रहे हैं और कई वर्षों के संकट के बाद एक नया रास्ता चुन रहे हैं।

अर्जेंटीना के राष्ट्रपति हावियर मिलेई को दी गई इटली की नागरिकता, जॉर्जिया मेलोनी घिरीं

रोम। इटली की सरकार ने अर्जेंटीना के राष्ट्रपति हावियर मिलेई को देश की नागरिकता देने का एलान किया है। इटली का यह फैसला मिलेई की इतालवी विरासत के चलते लिया गया है। हालांकि, अर्जेंटीना और इटली के विपक्षी दलों ने इस कदम का विरोध शुरू कर दिया है।

बताया जाता है कि हावियर मिलेई के दादा-दादी इटली से अर्जेंटीना चले गए थे। इसी लिहाज से इटली की जॉर्जिया मेलोनी के नेतृत्व वाली सरकार ने मिलेई को उनकी विरासत के लिए नागरिकता प्रदान की। हालांकि, इस निर्णय का इटली के कई राजनीतिक दलों ने विरोध किया है।

खासकर देश की नागरिकता नीति के विरोधियों का कहना है कि जहां देश छोड़कर जाने वाले लोगों को विरासत के आधार पर नागरिकता दी जा रही है, वहीं देश में ही जन्मे अप्रवासियों के बच्चों को ही नागरिकता से वंचित रखा जा रहा है।

इटली के मौजूदा कानून के मुताबिक, विदेशी नागरिकों को इटली की नागरिकता पाने के लिए 10 साल तक वहां रहना जरूरी है। यहां तक कि इटली में विदेशी माता-पिता से जन्मे बच्चों को भी 18 वर्ष की उम्र तक नागरिकता आवेदन के लिए रुकना पड़ता है

इटली की विपक्षी लिबरल पार्टी के नेता रिकार्डो मागी ने कहा कि इटली के लाखों लोगों को नागरिकता के लिए वर्षों तक नौकरशाही को झेलना पड़ता है। वे लोग यहीं पर रहते हैं, पढ़ते हैं, काम करते हैं और टैक्स देते हैं। लेकिन मिलेई से उलट उन्हें नागरिकता के लिए मुश्किलें झेलनी पड़ती हैं।

इटली में क्या हैं नागरिकता के नियम?

ऑक्सफैम इटालिया समेत कई संगठनों ने फ्रांस और जर्मनी की तर्ज पर इटली में इस वेटिंग पीरियड को कम करने की मांग उठाई है।

जॉर्जिया के नए राष्ट्रपति बने पूर्व फुटबाल खिलाड़ी मिखाइल कावेलशविली, विपक्ष ने खड़े किए सवाल

नई दिल्ली। पूर्व फुटबॉल खिलाड़ी मिखाइल कावेलशविली शनिवार को जॉर्जिया के राष्ट्रपति बन गए। इसी के साथ सत्तारूढ़ दल ने अपनी पकड़ मजबूत कर ली है। विपक्ष इसे देश की यूरोपीय संघ (ईयू) की आकांक्षाओं के लिए झटका और पूर्व शाही शासक रूस की जीत बता रहा है।

बता दें कि जॉर्जियाई ड्रीम पार्टी ने कावेलशविली को अपना नेता नामित किया, जो मैनचेस्टर सिटी के लिए प्रीमियर लीग और स्विस सुपर लीग के कई क्लबों में स्ट्राइकर थे। जॉर्जियाई ड्रीम पार्टी ने ईयू में शामिल होने की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लेने के साथ-साथ रूस के साथ संबंधों को रीसेट करने की इच्छा भी जताई है।

आसानी से जीता चुनाव 300 सीटों वाले निर्वाचक मंडल पर जॉर्जियाई ड्रीम पार्टी के नियंत्रण हासिल करते ही 53 वर्षीय कवेलशविली ने आसानी से मतदान जीत लिया। 26 अक्तूबर के चुनाव में जॉर्जियाई ड्रीम ने दक्षिण काकेशस राष्ट्र में संसद पर नियंत्रण बरकरार रखा। विपक्ष ने लगाए आरोप विपक्ष का आरोप है कि मॉस्को की मदद से चुनाव में धांधली हुई थी। जॉर्जिया के निवर्तमान राष्ट्रपति और मुख्य पश्चिम समर्थक दलों ने तब से संसदीय सत्र का बहिष्कार किया है और मतदान फिर से कराने की मांग की।

अमेरिका में गई एक और भारतीय की जान सड़क हादसे में छात्रा की मौत, दो अन्य घायल

वॉशिंगटन। अमेरिका में सड़क दुर्घटना में एक भारतीय छात्रा की मौत हो गई है। हादसे में दो अन्य भारतीय छात्र घायल भी हुए हैं, जिनमें से एक की हालत गंभीर है। घटना शुक्रवार आधी रात की है, जब अमेरिका के टेनेसी राज्य के मेम्फिस इलाके में एक वाहन ने कार को टक्कर मार दी। जिससे कार सवार भारतीय छात्रा की मौत हो गई।

आंध्र प्रदेश की निवासी थी नागा श्री वंदना

मृतका की पहचान 26 वर्षीय नागा श्री वंदना परिमाला के रूप में हुई है, जो आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिले की निवासी थी। एक व्यवसायी की बेटी वंदना साल 2022 में उच्च शिक्षा हासिल करने अमेरिका गई थी। वंदना अमेरिका के मेम्फिस विश्वविद्यालय से मास्टर ऑफ साइंस की पढ़ाई कर रही थी।

जिस हादसे में वंदना की जान गई, उसमें दो अन्य छात्र पवन और निकित घायल भी हुए हैं। दोनों का अस्पताल में इलाज चल रहा है। जांच में पता चला है कि एक वाहन नियंत्रण खोकर कार से टकरा गया, जिसमें वंदना की मौत हो गई।

अमेरिका में भारतीय छात्रों की मौत की घटनाएं बढ़ रहीं : गौरतलब है कि बीते कुछ माह में अमेरिका में भारतीय छात्रों की मौत की कई घटनाएं सामने आई हैं।

अमेरिका जाकर पढ़ाई करना भारतीय छात्रों का सपना होता है, लेकिन बीते कुछ समय से ये सपना दुस्वप्न में बदलता जा रहा है। इस साल अप्रैल तक ही अमेरिका में 11 भारतीय छात्रों की मौत हो चुकी थी और अब यह आंकड़ा काफी बढ़ चुका है।

सेना को रूसी मदद के झूठे वादे, परिवार से छिपाई भागने की बात, सीरिया में कैसे थे असद के आखिरी घंटे

दमिश्क। इसका असर यह हुआ कि जब विद्रोही सेनाएं दमिश्क में घुसीं, तब असद के प्रधानमंत्री से लेकर उनके मंत्रियों तक को आगे के कदम के बारे में कोई जानकारी नहीं थी

खुद भाग निकले, सेना से बोला झूठ

विद्रोहियों की तरफ से दमिश्क की तरफ बढ़ने के साथ ही सीरिया में हलचल का माहौल रहा। बशर अल-असद की सरकार के लिए यह सबसे कठिन समय रहा। दरअसल, राष्ट्रपति असद ने इस दौरान अपनी अधिकतर बातें गुप्त रखीं और विद्रोहियों को रोकने की कोई योजना सेना के साथ साझा नहीं की। बताया जाता है कि अलेप्पो के बाद हमा और होम्स विद्रोहियों के कब्जे में आने के बाद असद अचानक ही रूस भाग निकले। वह यहां अपनी पत्नी के कैंसर के इलाज के लिए पहुंचे थे। हालांकि, चौंकाने वाली बात यह है कि इस दौरान उन्होंने अपनी सेना को कहा कि रूसी मदद जल्द ही पहुंचेगी। इसके चलते सैनिक लगातार इस भ्रम में रहे कि रूसी सैन्य मदद से विद्रोहियों को रोक लिया जाएगा।

बताया गया है कि विद्रोहियों के दमिश्क को घेरने से ठीक पहले बशर अल-असद को अंदाजा हो गया था कि उनका शासन अब कुछ ही दिनों तक चल सकता है। इसके चलते उन्होंने राष्ट्रपति भवन से राष्ट्र के नाम संबोधन की भी तैयारी की थी। असद के मीडिया सलाहकार को इस संबंध में एक भाषण तैयार करने के लिए कहा गया था। यह भाषण अगली सुबह दिया जाना था।

सीरिया में विद्रोहियों के अभियान शुरू करने के बाद राष्ट्रपति बशर अल-असद अपनी सत्ता नहीं बचा सके और रूस की मदद से भाग निकले। हालांकि, असद के अचानक भागने का पूरा घटनाक्रम इतना भी आसान नहीं रहा। खुद को बचाने और सैनिकों को युद्ध के मोर्चे पर झोंकने के लिए उन्हें सेना से बहाने बनाने पड़े। इतना ही नहीं अपने भागने की योजना उन्होंने करीबियों को ही नहीं, बल्कि अपने परिवार तक को नहीं बताई थी

हालांकि, विद्रोही संगठनों के रात में ही दमिश्क में घुसने के साथ असद की सारी योजना धरी रह गई। असद, जिन्होंने भाषण देने की बात कही थी, ने फोन का जवाब देना बंद कर दिया। उनके मीडिया निदेशक की तरफ से भी जानकारी आना बंद हो गई। इसके चलते सेना के उच्च पदस्थ कमांडरों को भी आगे की कार्रवाई के लिए निर्देश मिलना बंद हो गए, जिससे सैनिक जहां-तहां अपनी पोस्ट छोड़कर भागने लगे। इसके चलते दमिश्क को विद्रोहियों ने बिना ज्यादा हिंसा के ही कब्जे में ले लिया। परिवार से छिपाई देश छोड़कर भागने की योजना रिपोर्ट्स के मुताबिक, जब यह तय हो गया कि सीरिया में अब असद की सत्ता ज्यादा समय तक नहीं चलेगी।

संजीव गुप्ता, राजीव गुप्ता के परिवार ने मां वैष्णो धाम सपनावत में कराया माता रानी का विशाल भंडारा

गाजियाबाद, करंट क्राइम। सपनावत के मां वैष्णो धाम मंदिर में रविवार को समरकूल ग्रुप के चेयरमैन संजीव कुमार गुप्ता एवं डायरेक्टर राजीव गुप्ता ने अपने परिवार संग, मां वैष्णो धाम मंदिर सपनावत में एक विशाल भंडारे का आयोजन कराया। मां वैष्णो धाम मंदिर में वर्षों से प्रत्येक रविवार को भंडारे का आयोजन कराया जाता है। इसी कड़ी में संजीव गुप्ता एवं राजीव गुप्ता ने अपने परिवार के संग प्रातः काल में माता रानी के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इसके पश्चात माता रानी को भोग अर्पण करने के पश्चात भंडारे का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गुप्ता परिवार के अनेक सगे संबंधी एवं मित्रगण उपस्थित रहे। जिनमें मुख्य रूप से संजीव कुमार गुप्ता, रश्मि गुप्ता, राजीव गुप्ता, सीमा गुप्ता, सुबोध गुप्ता, अभिषेक गुप्ता, सुरभि गुप्ता, आशुतोष गुप्ता, प्रियंका गुप्ता, तुषार गुप्ता, तनुज गुप्ता, तस्विक गुप्ता, टियारा गुप्ता, विकास गुप्ता, रोहित गोयल, राकेश गोयल, सोनू गोयल, प्रिंस गुप्ता, उमेश गर्ग, अंजलि गर्ग, मुकेश सिंघल, ताराचंद गुप्ता, आदेश गर्ग, रेनू गोयल, राधा गोयल, एवं निशा गर्ग सहित अनेक भक्तगण उपस्थित रहे।

होनहार बिरवान के होत चिकने पात : डॉक्टर आंचल चौधरी ने 94% के साथ एमपीटी आर्थो में पाया प्रथम स्थान

गाजियाबाद, करंट क्राइम। 'होनहार बिरवान के होत चिकने पात' हिंदी भाषा का एक बेहद लोकप्रिय मुहावरा है जिसका अर्थ होता है- प्रतिभाशाली व्यक्ति बचपन से ही अपनी प्रतिभा के लक्षण दिखाता है। इसी लोकोक्ति को साकार रूप देते हुए आंचल चौधरी का शैक्षणिक सफर रहा। भाजपा के महानगर मीडिया प्रभारी प्रदीप चौधरी की सुपुत्री आंचल चौधरी ने बचपन से ही अपने परिवार से आचरण, संस्कार को प्राप्त करते हुए शुरू से ही शिक्षा और कला के क्षेत्र में अव्वल मुकाम हासिल किया। अपनी कक्षा में प्रथम आना और उसके लिए कड़ी मेहनत करने का जुनून रखते हुए अपनी हाइ स्कूल, इंटर मीडिएट, बीपीटी, एमपीटी आर्थो की परास्नातक शिक्षा प्राप्त की।

बचपन से लेकर इंटर कॉलेज की पढ़ाई तक कक्षा में अव्वल रहते हुए भी कला प्रतियोगिता में अव्वल स्थान पर रहकर अपने कला कौशल को भी बरकरार रखा। चित्रकला तो उसको विरासत में अपने पापा प्रदीप चौधरी से मिली है। आंचल के पापा ऑयल कैनवास, वॉटर कलर पेंटिंग कला में पारंगत चित्रकार हैं मास्टर ऑफ आर्ट आगरा यूनिवर्सिटी डिग्री धारक हैं। आंचल ने चिकित्सा शिक्षण क्षेत्र में जाने के मन से बीपीटी की पढ़ाई हेतु आईटीएस मेडीकल कॉलेज मुरादनगर में दाखिला लिया। वहां पर अपने साढ़े चार साल के शिक्षण के दौरान गोल्डमेडिलिस्ट सूची में नामित होकर अपनी बैचलर डिग्री को पूरा किया। उसके बाद गाजियाबाद के एमएमजी हॉस्पिटल से 6 माह की इंटर्नशिप पूरी कर मास्टर पूरा करने के लक्ष्य को पूरा करने के उद्देश्य से एमपीटी आर्थो की डिग्री पूरा करने की पढ़ाई जारी रखी।

अपनी पढ़ाई के साथ साथ दिल्ली के प्रतिष्ठित हॉस्पिटल तथा राजनगर एक्सटेंशन में एक प्रतिष्ठित हॉस्पिटल में बतौर सीनियर फिजियोथैरेपिस्ट सेवा कार्य अनुभव भी प्राप्त किया। 25 नवम्बर को आंचल चौधरी सुमित मलिक संग परिणय सूत्र में बंधी। इन सभी खुशियों के साथ आंचल और उसके दोनों परिवार के लिए 14 दिसंबर की रात नई खुशियों को बिखेरती हुई आई। खुशी की बात थी आंचल का एमपीटी आर्थो का रिजल्ट आना जिसमें आंचल ने 94 प्रतिशत अंक के साथ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर कॉलेज की टॉपर सूची में शामिल होने का गौरव प्राप्त किया। अब आंचल अपने क्षेत्र में पूर्ण रूप से डॉक्टर आंचल चौधरी बनने के सपने को साकार कर चुकी है। उसका कहना है कि वह बेहद खुश है और अपने लड़की होने पर गर्व महसूस करती है।

डॉक्टर आंचल चौधरी ने अपनी ओर से संदेश देते हुए कहा कि मां बाप और परिवार की ओर से बेटियों को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने के लिए उसे उच्च शिक्षा प्राप्त करने का हर अवसर प्रदान करें। क्योंकि बेटियां शिक्षित होंगी तभी देश शिक्षित होगा। बेटी की पूर्ण शिक्षा ही बेटी के लिए सबसे अहम, अव्वल दर्जे का कन्यादान है। आंचल को चौधरी परिवार और मलिक परिवार जनों तथा संबंधियों द्वारा ढेर सारी बधाई दी गई बाकी बधाई देने वालों का सिलसिला जारी है। समाचार पत्र परिवार आंचल को अपनी ओर से शुभकामनाएं बधाई प्रेषित करता है।

वार्ड 86 में पार्षद मदन राय के कार्यालय में आयुष्मान कार्ड कैंप का हुआ आयोजन

175 लोगों ने कैंप का उठाया लाभ, 70 फार्म महिला और वृद्धा पेंशन के भरे गए

साहिबाबाद (करंट क्राइम)। वार्ड 86 के पार्षद मदन राय के कार्यालय में रविवार को आयुष्मान कार्ड, विधवा पेंशन, वोटर आईडी व जाति प्रमाण पत्र बनाने का कैंप लगाया गया। पार्षद मदन राय लीक से हटकर कार्य करने की दिशा में कैंप के माध्यम से लोगों को विभिन्न सुविधाओं का लाभ पहुंचाते हैं। इसी श्रृंखला में पार्षद कार्यालय पर वृहद शिविर लगाया गया। कैंप में सैकड़ों लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस दौरान 45 आयुष्मान कार्ड बनाए गए। कुल 175 फॉर्म महिला और वृद्धा पेंशन के भरे गए। पार्षद मदन राय ने बताया कि वार्ड 86 कैंप के मध्य से सरकारी सुविधाओं का लाभ सुनिश्चित किया जा रहा है। कैंप के सार्थक परिणाम मिल रहे हैं। इस अवसर पर स्वीटी, अनीता, मनप्रीत सिंह, निर्मला, सोनू, बबीता, सीमा, लोकेश, विनोद आदि लोग मौजूद रहे।

वरदान मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल में निःशुल्क सर्जरी कैंप का आयोजन

गाजियाबाद, करंट क्राइम। वरदान मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल में रविवार को निःशुल्क सर्जरी कैंप का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कैंप का उद्घाटन विपिन गर्ग, डायरेक्टर (गुडलक इंडिया लिमिटेड) एवं ललित जायसवाल (अध्यक्ष) वरदान मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल के द्वारा किया गया।

इस अवसर पर वरदान मल्टीस्पेसिलिटी हॉस्पिटल से अशोक कुमार सिंघल, विपुल, डॉ. हिमांशु भारद्वाज एवं अन्य गणमान्य सदस्य मौजूद रहे। कैंप में निःशुल्क सर्जरी के लिए छः मरीजों ने अपना रजिस्ट्रेशन करवाया जिनकी सफलतापूर्वक सर्जरी हुई। सर्जरी कैंप को डॉ. अभय सिंगल (सीनियर सर्जन) द्वारा लीड किया गया। एनस्थीसिया के लिए डॉ.अंशुल, वरदान की ओटी टीम ने अपना योगदान दिया। वरदान के मेडिकल सुपरिटेंडेंट डॉ. हिमांशु भारद्वाज ने बताया कि जनवरी माह में भी इस तरह का कैंप अयोजित होगा जिसमें मरीज जो धन के अभाव के चलते अपना इलाज नहीं करवा पाते हैं, उनके लिए संपूर्ण इलाज वरदान से निःशुल्क मिलेगा।

कूड़े के ढेर में आग लगी तो मची अफरा तफरी

गाजियाबाद करंट क्राइम। टीला मोड़ थाना क्षेत्र में एक कूड़े के ढ़ेर में आग लगने से अफरा तफरी मच गई। आसपास के लोगों की भीड़ जुट गई। आग की विकराल लपटों को देखकर फायर विभाग को सूचना दी। इस दौरान आसपास बस व कई अन्य वाहन भी चपेट में आने से बच गए। जहां दमकल की की गाड़ी ने आग पर काबू पाया। एक दिन पहले भी गाजियाबाद में कूड़े के ढेर से आग फैल गई थी। यह पूरी घटना सिकंदरपुर चौकी के पीछे हिंडन एयरपोर्ट वाले रास्ते पर कूड़े में ढेर मे लगी। जहां भीषणलगी आग और धीरे-धीरे आग कि और लपटें तेज होती गईं और आग ने एक भयंकर रूप ले लिया।

आग के पास ही 2 निजी बस खड़ी थीं जिसमें आग लग सकती थी। मौके पर दमकल विभाग की एक गाड़ी ने मौके पर पहुंचकर आकर आग पर काबू कर लिया और बड़ा हादसा होने से टल गया। मौके पर पुलिस प्रशासन और दमकल विभाग की गाड़ी भी मौजूद रही आग को पूरी तरह बुझा दिया गया है।

समाधान शक्ति सामाजिक संस्था ने सरदार वल्लभ भाई पटेल की पुण्यतिथि पर दी श्रद्धांजलि

साहिबाबाद (करंट क्राइम)। समाधान शक्ति सामाजिक संस्था के कार्यकर्ताओं ने रविवार को मोहन नगर स्थित सरदार बल्लभभाई पटेल की पुण्यतिथि के अवसर पर प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। सरदार बल्लभ भाई पटेल की पुण्यतिथि के अवसर पर संस्था के उपाध्यक्ष डीएन कौल ने कहा सरदार वल्लभभाई पटेल ने 500 से अधिक रियासतों को भारतीय संघ में मिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संग्राम में सरदार पटेल का दृढ़ संकल्प और नेतृत्व अद्वितीय था। पटेल की विरासत आज भी देश के लिए प्रेरणादायी है। सरदार वल्लभभाई पटेल ने अपने दृढ़ संकल्प, अडिग इच्छाशक्ति और नेतृत्व के प्रति सैद्धांतिक दृष्टिकोण के कारण 'भारत के लौह पुरुष' की उपाधि अर्जित की। अध्यक्ष लेखराज छावड़ी ने कहा कि वल्लभभाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर, 1875 को गुजरात के नडियाद गांव में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। कठोर परिश्रम, अनुशासन और आत्मनिर्भरता जैसे गुण, जो बाद में उनके नेतृत्व और सेवा के दृष्टिकोण को परिभाषित करते थे, उनमें बचपन से ही दिखाई देने लगे थे। वल्लभभाई पटेल अपने पिता झावेरभाई पटेल से ही प्रेरित होकर देशभक्ति के जज्बे से लबालब हो गए। उनके पिता ने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की सेना में सेवा की थी। इन शुरुआती अनुभवों ने न्याय, सम्मान और लचीलापन के प्रति एक मजबूत प्रतिबद्धता को बढ़ावा दिया। इस मौके पर आरपी सिंह, भूषण लाल, प्रदीप देवली, सुनील शर्मा, प्रमोद, प्रेम त्यागी, सुमन सती, आशा पवार, शिव कुमार शर्मा, लाजपतनगर मंडल अध्यक्ष विजेंद्र भड़ाना मौजूद रहे।

ब्राह्मण परिवार उत्थान संस्था ने कराया युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन

साहिबाबाद (करंट क्राइम)। वसुंधरा भगवान परशुराम वाटिका सेक्टर 10ए ग्रीन बेल्ट पर युवक युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिले के सैकड़ों ब्राह्मण परिवार कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। संस्था के अध्यक्ष डॉ बी के शर्मा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष पंडित अनिरुद्ध वशिष्ठ, भाजपा के वरिष्ठ नेता पंडित योगेश कुमार त्रिपाठी, सुनील शर्मा मुख्य रूप से उपस्थित रहे। यह तृतीय सम्मेलन था इसमें 100 से अधिक पंजीकरण कराए गए।

दूसरा कार्यक्रम भारत रत्न पंडित मदन मोहन मालवीय शिक्षा प्रोत्साहन पुरस्कार समारोह आयोजित किया गया। कक्षा 10, कक्षा 12 में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण 100 से अधिक छात्र छात्राओं को मंच से सम्मानित किया गया। इसी दौरान बच्चों के द्वारा मंच से सांस्कृतिक कार्यक्रम की अद्भुत छटा प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर डॉक्टर भावना, नीलम शर्मा, अशोक शर्मा, सुशील चतुर्वेर्दी, विजय कुमार मिश्रा, अरविंद शर्मा, गिरीश शर्मा, जे पी शर्मा, अजय शर्मा, दीपक शर्मा, आर पी त्रिपाठी, आर पी शर्मा, विद्या निधि मिश्रा, विनय मिश्रा, मुनीश मिश्रा, राम शिरोमणि दुबे, अनिल शर्मा, विजय शर्मा, आदेश शर्मा आदि लोग उपस्थित रहे।

मौजूदा आरडब्लूए के खिलाफ गौर होम्स सोसाइटी के निवासियों ने किया शांतिपूर्ण रैली का आयोजन

गाजियाबाद, करंट क्राइम। गौर होम्स सोसाइटी गोविंदपुरम गाजियाबाद के निवासियों ने रविवार को भ्रष्टाचार निवारण समिति के बैनर तले सोसाइटी में फैली मेंटेनेंस की अव्यवस्थाओं जैसे लिफ्टों का बिना सर्टिफिकेट संचालन, फायर सिस्टम ध्वस्त होना एवं सोसाइटी में भारी वित्तीय अनियमितताओं तथा गत छः वर्षों में एक भी जीबीएम न कराए जाने तथा झूठे आरोप लगाकर निवासियों को फंसाने के विरोध में एक शांतिपूर्ण ढंग से ज्ञापन रैली का आयोजन किया गया। जनता ने रैली में बढ़-चढ़ कर भाग लिया एवं अपने विचार रखे। सोसाइटी कमेटी के अध्यक्ष मुकेशपाल सिंह, सचिव रवि चौहान, पूर्व सचिव अभिषेक त्यागी, उमा राणा, कोषाध्यक्ष हरिकांत बिना चुनाव लड़े छः वर्षों से कानून की अवमानना करते हुए डिप्टी रजिस्ट्रार के आदेश के विरुद्ध जबरन कमेटी पर कब्जा किए बैठे हैं। इनकी तरफ से कोई भी पदाधिकारी मौके पर उपस्थित नहीं हुआ, ना ही हमारी समस्याओं का ज्ञापन ही लिया गया। इससे इनकी मंशा साफ जाहिर है। इनके खिलाफ डिप्टी रजिस्ट्रार को लिखित शिकायत की जा चुकी है।

रैली में भ्रष्टाचार निवारण समिति के जय किशोर गौतम, डाक्टर बी पी शर्मा, बी पी वशिष्ठ बेबाक, राजेंद्र शर्मा, पूर्व अध्यक्ष अतुल त्यागी, सुभाष श्रीवास्तव, राजीव त्यागी एडवोकेट, तिवारीजी एडवोकेट, मोहित बंसल, विकास, आलम एवं अन्य तथा महिलाओं में मुक्ति शर्मा, कामिनी, निशा, छवि त्यागी, दीपा चौधरी आदि महिलाओं एवं बच्चों सहित 300 से अधिक लोगों ने भाग लेकर अपनी समस्याओं को रखा। गौर होम्स सोसाइटी की अव्यवस्थाओं की बात को प्रशासन तक पहुंचाने एवं कमेटी को ज्ञापन के उद्देश्य से रविवार की रैली का सफल आयोजन किया गया।

रास्ते के विवाद में दुहाई गांव में हंगामा

चली गोलियां, पुलिस ने पांच को भेजा जेल

मधुबन बापूधाम थानाक्षेत्र के दुहाई मेरठ रोड का है मामला

गाजियाबाद, करंट क्राइम। सिटी जोन के अंतर्गत आने वाले मधुबन बापूधाम थानाक्षेत्र में रविवार को दो पक्षों में प्लॉट के रास्ते निकालने को लेकर झगड़ा हो गया। पीआरवी 4882 को जैसे ही सूचना मिली की दुहाई में मेरठ रोड पिलर नंबर 741 के पास दो पक्षों में झगड़ा हुआ है और फायरिंग हो रही है, पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस मौके पर पहुंची तो प्लॉट पर रास्ते के विवाद को लेकर आपस में मारपीट और फायरिंग का मामला प्रकाश में आया। इस मामले में पुलिस ने गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज करते हुए कुल पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। एसीपी कवि नगर अभिषेक श्रीवास्तव का कहना है पुलिस ने पूरे मामले की जांच शुरू कर दी है। मुकदमा दर्ज कर पांचों आरोपियों को जेल भेजा जा रहा है। साथ ही इस पूरे मामले की जांच की जा रही है।

पहले भी हो चुके हैं कई विवाद

करंट क्राइम। मधुबन बापूधाम थाना पुलिस से जानकारी मिली है कि रास्ते को लेकर दोनों पक्षों में लंबे समय से विवाद चल रहा था। पुलिस इस मामले में पूर्व में भी दोनों पक्षों को चेतावनी दे चुकी थी। इसके बावजूद रविवार को दोनों पक्ष आपस में झगड़ गए और मारपीट करते हुए हवाई फायरिंग भी की गई थी।

पुलिस ने इनकी की गिरफ्तारी

करंट क्राइम। एसीपी कवि नगर अभिषेक श्रीवास्तव ने बताया है कि हवाई फायरिंग और मारपीट के मामले में मोनू उर्फ अमनवीर, अनुज, वीरेंद्र, मोंटू उर्फ निखिल और सुधीर को गिरफ्तार किया गया है। सभी ग्राम दुहाई थाना मधुबन बापूधाम क्षेत्र के रहने वाले हैं। मारपीट करने वाला पक्ष और हवाई फायरिंग में हंगामा करने वाला पक्ष आपस में जानकार हैं। पुलिस ने इस मामले में विधि कार्रवाई शुरू कर दी है।

क्यों कहा कहने वाले ने कि ताकतवर लेडी जनप्रतिनिधि के रडार पर कब कौन सा निशाने पर आ जाये अवैध निर्माण? इस बात की गारंटी तो कोई भी नहीं ले सकता साहिबान? कहने वाले ने कहा मैडम थी एक धर्मशाला के कार्यक्रम में मौजूद? यहां पर उन्होंने धर्मशाला की लैण्ड वाली हकीकत जानने का किया प्रयास? सामने से एलएमसी वाली जमीन की सुनाई दी आवाज? सुना है इस आवाज को सुनकर मैडम हो गई हैरान? उन्होंने कहा इतनी बड़ी धर्मशाला बन ली, फिर क्यों नहीं दी यहां पर एमएलसी का बोर्ड लगाकर ओरिजनल पहचान? कहने वाले ने कहा ना जाने अब क्या होगा क्योंकि चला गया है उनका अब यहां पर ध्यान?

क्यों कहा कहने वाले ने कि मुरादनगर विधानसभा के एक भगवा मंडल में भगवा कमिश्नर को गिराने के लिए हो गया है एक ग्रुप एक? कहने वाले ने कहा इसमें कईयों का दर्द तो ठीक है? मगर कईयों का विरोध है फेक? कहने वाले ने कहा मौजूदा कमिश्नर को गिराने के लिए पुण्डीर एंड टीम ने मिलाये हैं? आपस में हाथ? कहने वाले ने कहा अगर विरोध के स्वर उठाने होते तो शुरू से ही उठाने थे? सुर इसीलिए उठाये जा रहे हैं क्योंकि चल रहे हैं मंडल के चुनाव? कहने वाले ने कहा एक ग्रुप को गिराने के लिए दूसरा ग्रुप कर रहा है प्रयास? वैसे भी ये कोई नई राजनीति नहीं है? उठा-पटक ऐसी ही होती है, उठाकर देख लो राजनीति का इतिहास?

क्यों कहा कहने वाले ने कि जब से चल रहा है भगवा पहलवान का फोन साईलेंट? तबसे हम फील कर रहे हैं सूना-सूना? कहने वाले ने कहा अगर उनकी जल्दी वापसी नहीं हुई, तो नदिया पार के दो भगवा कमिश्नरों का मामला रह जायेगा अनसुना? कहने वाले ने कहा पहलवान के प्रिय इन दो भगवा कमिश्नरों का विकेट गिराने का कर रहे हैं करने वाले पूरा प्रयास? अगर यही स्थिति बनी रही तो फिर कोई और काटेगा उनके हिस्से की घास?

क्यों कहा कहने वाले ने कि हमें पता है पूरे मान से उनकी बातों में होता है अर्थ? वो अपने शब्दों को कभी भी नहीं करते हैं व्यर्थ? फिर हमें समझ नहीं आ रहा क्यों उन्होंने पूरे मान से अपनी पोस्ट पर स्पेशली लिखा गाजियाबाद? गाजियाबाद लिख कर ना जाने उन्होंने कौन सा संदेश दिया साध? कहने वाले ने कहा जो भी हो उन्होंने गाजियाबाद लिख कर कर दिया कईयों के पेट में दर्द? ना जाने क्या असर दिखायेगा उनका फेसबुक पर लिखा हुआ ये तर्क?

क्यों कहा कहने वाले ने कि भगवा कमांडर के प्रिय क्रान्तिकारी त्यागी के क्रान्तिकारी ऑडियो और वीडियो का इंतजार करने वाले चेहरे अपने दिलों को टूटने का कर लें इंतजाम? जैसा वो सोच रहे हैं वैसा इंटरटेंटमेंट अब उनको नहीं मिलने वाला श्रीमान? क्रान्तिकारी त्यागी ने पूरे जोर से कर दिया है ऐलान? कह दिया है नहीं पूरा होने देंगे अब वो किसी का ऑडियो और वीडियो वाला सपना? अब भले ही हमें इस राजनीति में कुछ मिले ना मिले? जिसे हम चाहते थे वो विधायक बन गया है अपना?

क्यों कहा कहने वाले ने कि मुराद पूरी करने वाले भाजपा के विधायक? अपने लोगों के लिए दिल में जगह रखते हैं खास? करते हैं वो अपने हर समर्थक का सपना पूरा? निभाते हैं दूर तक उसका साथ? सुना है मैम्बर त्यागी भी इस बात का रखते हैं पूरा ध्यान? जब भी उन्हें अपनेपन का संदेश देना होता है, वो तरीके ढूंढ लेते हैं श्रीमान? हमने देखा जब पीएम आये थे गाजियाबाद, तब की थी लगभग 20 चेहरों ने मुलाकात? बावजूद इसके मैम्बर त्यागी जी ने सोशल मीडिया पर सिर्फ और सिर्फ की अपने डियर विधायक की फोटो शेयर? उनकी इस मोहब्बत को देखकर लग रहा है कि उपाध्यक्ष वाले मैटर में अब विधायक जी को करनी पड़ेगी उनकी केयर?

क्यों कहा कहने वाले ने कि नदिया पार की मैडम गुप्ता का राजनीति में पूरा हो हर ख्वाब? इस बात की चिंता हमें लगी रहती है साहब? हम चाहते हैं उनका मंडल अध्यक्ष वाला पूरा हो ख्वाब? पता चला है उनको इस बार हैवीवेट वालों से लेकर खन्ना जी का मिल रहा है पूरा साथ? अगर इस साथ ने दिखा दिया असर? तो पूरी होगी उनकी रूकी हुई कसर?

क्यों कहा कहने वाले ने कि जब भीड़ जुट गई भगवा कमिश्नरी के कार्यालय पर? तब इस भीड़ को देखकर मौजूदा कमिश्नर नहीं हुए ज्यादा हैरान? उन्होंने अपनी टीम में दिया स्पष्ट संदेश? कहा अगर हमें पहले से भीड़ जुटाने का पता होता तो इससे ज्यादा भीड़ हम जुटा लेते श्रीमान? कहने वाले ने कहा जरूर किसी विरोधी ने भीड़ जुटाने का खेला था गेम? ताकि वो एक झटके में खत्म कर सके मौजूदा कमिश्नर का मंडल पर क्लेम?

क्यों कहा कहने वाले ने कि नदिया पार की एक कमिश्नरी में चुनाव अधिकारी आने से मच गई जबरदस्त भीड़? अधिकतर दावेदार उनके सामने खुलवाना चाह रहे थे अपनी तकदीर? हमने देखा यहां पर काफी प्रयासों के बाद भी सागर सा दिल रखने वाले मिस्टर रावत की नहीं हो पाई बाऊजी से मुलाकात? ऐसे कैसे पूरा होगा अब हमारे रावत जी का कमिश्नर बनने का ख्वाब?

क्यों कहा कहने वाले ने कि पूरी शीतलता से भगवा मैडम खेल रही हैं राजनीति के गेम? सुना है उनके बैटरहॉफ भी राजनीति में अब सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं? मजबूत हो रहा है भाजपा में उनका भी क्लेम? कहने वाले ने कहा सुना है मिस्टर हसबैंड अब भगवा कमिश्नरी में आजमाना चाहते हैं अपने हाथ? देखना अब ये है कि उनकी मैडम की कितनी चलेगी इस मामले में बात?

नोट : उठते सवालों का करंट लेखक की व्यक्तिगत राय नहीं है, बल्कि रोजाना क्षेत्र में उठने वाली चर्चाओं का संग्रह है।

दैनिक करंट क्राइम पोस्ट ऑफ द डे

गाजियाबाद (करंट क्राइम)। समाजवादी नेता जेपी कश्यप हमेशा से अपने पारिवारिक सरोकारों को लेकर सजग रहते हैं। वो अपनी खुशी को फेसबुक पर भी साझा करते हैं। भतीजे की शादी के लिए जब रिश्ता पक्का किया तो इस पल को फेसबुक पर साझा किया। साहिल और राखी को आशीर्वाद दिया। यह पोस्ट बनी करंट क्राइम पोस्ट ऑफ द डे।